जय श्रीकृष्ण

श्रीमद्भागवत संदेश

2

ग्रीष्म अंक

संरक्षक : भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी)

श्रीमहालक्ष्मी मंदिर, कोलकाता में श्रीमद्भागवत सप्ताह के आयोजक, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री आर. पी. गोयनका को व्यास पीठ से माल्यार्पण करते हुए श्रीठाकुरजी

वृन्दावन में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के मध्य पत्रिका के सह सम्पादक पं. श्रीबिष्णु पाठक के सुपुत्रद्वय चि. शिवम् एवं चि. रुद्रम का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराते पूज्य श्रीठाकुरजी

संरक्षक :
- भागवत भास्कर
  श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

प्रकाशक :
- श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
  रमणरेती, वृन्दावन–281121

सम्पादक :
- पं. श्री किशन लाल जी शास्त्री
  भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादक :
- पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत), कोलकाता
  ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ
  दूरभाषः 9331033090

सम्पादक मण्डल
- श्रीदेवकीनन्दन जोशी, कटक
- श्रीमती मीना अग्रवाल, दिल्ली
- श्रीमती बृजबाला गौड़, वृन्दावन
- डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया, वृन्दावन
- श्री विनय पाठक, मथुरा

पत्राचारः
- पं. श्रीहरीशंकर उपाध्याय
  श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
  श्रीभागवत कृपा निकुंज
  रमणरेती, वृन्दावन–281121 (मथुरा), उ.प्र.
  दूरभाष : 0565–2540857, 9897042861

मुद्रण–संयोजन :
- श्रीहरिनाम प्रेस
  बाग बुन्देला, लोई बाजार
  वृन्दावन. फोन : 2442415

श्रीमद्भागवत संदेश

2
ग्रीष्म अंक

श्रीगोपी गीत

शरदुदाशये साधुजात–
सत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद विघ्नतो नेह किं वधः।।

श्रीमद्भागवत–10/31/2

शरद काल के पंकजात की,
सुखद सूषमा चोर नैन से।
मिलन का सुसंकेत तूँ किये,
अब अलक्ष्य हो घात तूँ किये।।
नयन बाँण से बार–बार तूँ
हृदय बेधते प्राणनाथ हे।
वध न ये कहाँ ? क्यों नहीं कहो,
हम अमोल हैं दासियाँ सभी।।

• हिन्दी पद्यानुवाद : श्रीरामानुज शास्त्री जी •

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

3 : **सम्पादकीय / सह सम्पादकीय**

4 : **श्रीठाकुरजी :** एक परिचय

5 : **उपनयन संस्कार :** श्रीठाकुरजी

6 : **कहाँ हो प्यारे** : श्रीबिन्दुजी

7 : **परमार्थ निरूपण :** पं. श्रीकिशन लाल शास्त्री

9 : **सनातन धर्म भास्कर :** पं. श्रीरामानुज शास्त्री

13 : **साधुनोति परम कार्यमिति–साधु :** श्रीठाकुर जी

15 : **ज्ञान, कर्म तथा भक्ति :** डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया

19 : **नित्यकर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र**

20 : **धन्या ब्रज वसुन्धरा :** श्री सौरभ गौड़

24 : **वास्तु शास्त्र परिचय :** पं. श्रीबिष्णु पाठक

27 : **वास्तु–एक दृष्टि में :** पं. श्रीबिष्णु पाठक

28 : **संकट नाश के लिए – संकटनाशनस्तोत्रम्**

29 : **चौघड़िया मुहूर्त**

30 : **सन्त उवाच** : श्रीमदन गोपाल शर्मा

31 : **भजन:** संकलित द्वारा: चन्द्रिका

32 : **व्रत पर्व 25 मई से 4 सितम्बर 09**

39 : **प्रेम–प्रचार :** ठाकुर जी के साहित्य एवं भजन

40 : **संस्थान के सेवा प्रकल्प**

भागवत भास्कर श्री कृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी' के आगामी कार्यक्रम

1. 19 मई से 25 मई 2009	:	आगरा
2. 27 मई से 3 जून	:	पालम गाँव, दिल्ली
3. 10 जून से 17 जून	:	चण्डीगढ़
4. 20 जून से 27 जून	:	लुधियाना
5. 05 जुलाई से 11 जुलाई	:	केलिफोर्निया (अमेरिका)
6. 12 जुलाई से 18 जुलाई	:	हिन्दू सेंटर, न्यूयार्क
7. 19 जुलाई से 25 जुलाई	:	हिन्दू टेम्पल, वाशिंगटन डी. सी.
8. 26 जुलाई से 2 अगस्त	:	दुर्गा टेम्पल, वर्जीनिया
9. 06 अगस्त से 14 अगस्त	:	जेक्सन हाइट, न्यूयार्क (अमेरिका)
10. 15 अगस्त से 22 अगस्त	:	श्रीमंगल मंदिर, वाशिंगटन डी.सी.

सम्पादकीय

भगवद्रस निमग्न पाठकश्रेष्ठ,

श्री कृष्ण प्रेम संस्थान की ओर से प्रकाशित श्रीमद्भागवत सन्देश का द्वितीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुये हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है।

प्रथम अंक का विमोचन श्रीधाम वृन्दावन में आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह आयोजन के मध्य विशाल मंच पर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। अनेकों भक्तों ने इसकी प्रतियाँ प्राप्तकर सराहना की और हमारा उत्साहवर्धन किया।

इस पत्रिका के माध्यम से परमपूज्य श्रद्धेय श्री ठाकुर जी द्वारा प्रसारित भगवद् भक्तिमय कथा-प्रसंगों से तो आप लाभान्वित होंगे ही, साथ ही उनके अलौकिक प्रवचनों के मूलभावों को आत्मसात करके हिन्दू धर्म व संस्कृति के रक्षण और पोषण हेतु प्रेरित व तत्पर भी होंगे।

पत्रिका की शिक्षाप्रद सामग्री और भगवद्भक्तिपरक आलेख, आपके चिन्तन, मनन व स्वाध्याय के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे तथा घर-परिवार के वातावरण को सांस्कृतिक प्रदूषण के दानव से भी बचायेंगे, ऐसी हमें आशा है।

श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हों। सकारात्मक सोच बनायें। जीवन का उद्देश्य निश्चित करें और संस्कृति संरक्षण हेतु धर्मकार्यों में अग्रसर हो आनन्दमय वातावरण का निर्माण करें। जय श्री कृष्ण।

पं. किशन लाल शास्त्री
भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादकीय

श्रीकृष्ण प्रेमी भक्तगण,

राधा माधव की कृपा एवं आपके सहयोग से प्रेरित हो श्रीमद्भागवत सन्देश का द्वितीय अंक ''ग्रीष्म'' प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हो रही है।

पत्रों के माध्यम से अनेकानेक सुझाव एवं बहुत से शिक्षाप्रद लेख संस्थान को प्राप्त हुए, जिसके लिये संस्थान आपका आभारी है एवं भविष्य में भी इसी प्रकार की स्नेहमयी कामना रखता है।

विगत 1 मई 2009 को कोलकाता प्रवास के मध्य ठाकुर जी ने श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की कोलकाता शाखा का शुभ उद्घाटन किया, जिसका प्रथम दायित्व आप भक्तगणों को (विशेष कर पूर्वी भारत एवं नेपाल) संस्थान की धार्मिक गतिविधियों से अवगत कराना रहेगा।

प्रभु कृपा रही तो आगामी अंक के पश्चात् ''संदेश'' का प्रकाशन मासिक रूपेण होगा जिससे हम सभी को सत्संग लाभ होगा।

आदरणीय श्री ठाकुर जी एवं पितातुल्य पं. श्रीकिशन लाल जी की कृपा दृष्टि रहे तथा आप पाठकवृन्द का सहयोग इसी प्रकार बना रहे,

इसी मंगल कामना के साथ....

पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत)
ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

अति सहज व्यक्तित्व

श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री (ठाकुरजी)

वैदिक आध्यात्मिक व्यास परम्परा के प्राणाधार श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी) का जन्म वृन्दावन के निकट लक्ष्मणपुरा ग्राम (मथुरा, उ.प्र.) में 1 जुलाई 1960 में हुआ। पं. श्रीरामशरण उपाध्याय और श्रीमती चन्द्रवती देवी की इस मेधावी सन्तान ने अपने पितामह पं. भूपदेव उपाध्याय से बचपन में ही रामायण एवं कृष्ण–चरित्र का मनोयोग से श्रवण किया।

श्रीठाकुरजी को प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही वीतराग श्रीस्वामी रामानुजाचार्यजी महाराज का सानिध्य मिला, जिनसे इन्हें गीता, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त की भी शिक्षा मिली। श्रीजगन्नाथपुरी स्थित श्रीजीयर स्वामी पीठ के मठाधीश श्रीगरुड़ध्वजाचार्यजी से श्रीवैष्णव दीक्षा प्राप्त हुई तथा श्रीवैष्णव दीक्षा देने का अधिकार भी मिला।

व्याकरण में आचार्य और दर्शन शास्त्र में एम.ए. की उपाधि से विभूषित श्रीठाकुरजी ने शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया। श्रीठाकुरजी सम्भवतः देश के प्रथम ऐसे व्यास हैं, जो मात्र 48 वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के 865 विशाल आयोजन कर चुके हैं। आपकी कथा शैली इतनी सरस एवं सरल है कि सभी श्रेणी के श्रोता आनन्दमग्न हो जाते हैं। आपके निर्देशन में वृन्दावन में श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत श्रीमद्भागवत धाम में श्रीभागवत एवं वेदादि की निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था की गयी है। भागवतकृपा निकुंज में एक भव्य सत्संग हाल का निर्माण किया गया है जिसमें श्रीमद्भागवत सप्ताह आदि धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। एक आतिथेयम् निर्माणाधीन है जो शीघ्र ही अतिथियों के लिए आवासीय सुविधा हेतु उपलब्ध होगा।

'सर्वभूतहितेरता' की भावना से ओत प्रोत श्रीठाकुरजी अति विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। आपका व्यक्तित्व भगवत्–भक्तों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। आपकी वाणी में दिव्य ओज है और मिठास ऐसी कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रोता आत्मविभोर होकर अपना सर्वस्व अपने प्यारे श्रीकृष्ण को समर्पित करने को तत्पर हो उठते हैं।

श्रीठाकुरजी की शास्त्र सम्मत मान्यता है कि श्रीमद्भागवत श्रीकृष्ण–स्वरूप ही है। विद्वत्–समाज द्वारा 'भागवत भास्कर' उपाधि से सम्मानित श्रीठाकुरजी हिन्दू संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार हेतु मनीला, शिकागो, कनाडा, यूरोप, हांगकांग, अमेरिका तथा लंदन में श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ प्रसाद बाँट चुके हैं।

उपनयन (जनेऊ) संस्कार

● श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

भारतीय वैदिक वाङ्मय में सुसंस्कारों से समन्वित जीवन ही श्रेष्ठ जीवन माना जाता है। मानवता के मानवीय गुणों का परिपालन वैदिक पद्धति के अनुसार किया जाये तो मानव में दैवीय गुणों का समावेश होता है। व्यावहारिक जीवन में जब दैवीय गुणों का पुट लग जाये तो मानव ऋषितुल्य श्रेष्ठ मानव कहलाता है। वैदिक परम्परा में महाराज मनु ने मानव के लिए षोडश संस्कारों का आदेश किया है। जिसमें ५ तो प्रमुख हैं, यथा– १. जन्म संस्कार २. नामकरण संस्कार ३. उपनयन संस्कार ४. वेदारम्भ संस्कार ५. विवाह संस्कारादि। विशेषकर ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य इन तीनों को द्विज कहा जाता है। द्विज का तात्पर्य है दो बार जन्म लेना। एक बार मातृ उदर से एवं दूसरा जन्म उपनयन संस्कार से। उपनयन 'जनेऊ' संस्कार के बाद समस्त वैदिक कर्म करने का हमें पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है क्योंकि 'संस्कारात् द्विज उच्यते'।

हमारे ऊपर ३ प्रकार के ऋण होते हैं, यथा–१. देव ऋण २. ऋषि ऋण ३. पितृ ऋण। इन तीनों ऋणों का स्मरण बना रहे एवं ऋण मुक्ति का हम प्रयास कर सकें इसके लिए जनेऊ में तीन धागे होते हैं।

१. देव ऋण

सूर्य हमें प्रकाश देते हैं, चन्द्र हमें शैतल्य पूर्ण रोशनी देते हैं, पवन हमें श्वाँस एवं जीवन के लिए आक्सीजन देते हैं, चन्द्रमा वनस्पतियों के स्वामी हैं, सूर्य तेजस्विता के प्रतीक हैं। अतः सूर्याय स्वाहाः, चन्द्रमसे स्वाहाः, पवनाय स्वाहाः, आदि मन्त्रों के द्वारा हम यजन करते हैं एवं सूर्य अर्घ के द्वारा सूर्योपस्थान करते हैं। हवन आदि के द्वारा देव पूजन करते हैं और देवों की कृपा के भाजन बनते हैं और उनके आशीर्वाद के पात्र बनते हैं एवं देवतुल्य सद्गुण हमारे जीवन में आते हैं और देवाराधन के द्वारा हम देव ऋण से मुक्त होते हैं।

२. ऋषि ऋण

श्रेष्ठ मनुष्य के लिए हमारे मनीषि ऋषियों ने एक मर्यादा एवं पद्धति बनाई है जिसके अनुसार मनुष्य चले तो उसमें श्रेष्ठता का उदय होता है अन्यथा मनुष्य और पशु में कुछ अन्तर ही नहीं रहता। यथा– **'आहार निद्रा भय मैथुनञ्च सामान्य मेतत् पशुभिर्नराणां ज्ञानोहि तेषां अधिको विशेषो, ज्ञानेन हीना पशुभिः समाना'** अर्थात् आहार, निद्रा, भय एवं सन्तानोत्पत्ति क्रिया ये मनुष्य और पशु की एक जैसी क्रियायें हैं। अन्तर तो सिर्फ यह है कि मनुष्य में कर्त्तव्यपालन का बोध एवं ज्ञान का आधिक्य होता है। इसलिए मनुष्य मानव कहा जा सकता है और पशु तो **'पश्यति अविशेषण सर्वं यः स पशुः'** अर्थात पशु में ज्ञान नहीं होता और यदि मनुष्य में ज्ञान भक्ति कर्म की विवेकशून्यता है तो वह भी पशुतुल्य ही है। अतः ऋषियों के रचित ग्रन्थों का हम अध्ययन करें और उनके बताये मार्ग पर चलते हुए हम जीवन यापन करें यथा–**मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, स्वाध्यायन् माम् प्रमदितव्यम्**

आदि ऋषिवाक्यों पर चलते हुए जीवन यापन करें जैसे हमारे मनीषियों ने कहा है–

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोवलम्।।

अर्थात जो बड़ों का सम्मान करते हैं, बुजुर्गों को जो नित्य प्रणाम करते हैं। उनकी आयु, विद्या, यश और बल की बढ़ोत्तरी होती है और वे जीवन में उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त करते हैं।

अतः ऋषि आदेश को अध्यादेश मानकर जो चलता है वह उन्नतिशील बनता है और ऋषियों के ऋण से मुक्त होता है। जनेऊ का दूसरा धागा इसी ऋण स्मरण का प्रतीक है।

३. पितृ ऋण

हमारे पूर्वजों ने हमें एक खानदान दिया है, एक वंशपरम्परा दी है एवं लोकरीति व्यवहार की एक पद्धति दी है। अतः अपने पूर्वजों की वंश परम्परा का अनुशीलन करते हुए पितृपक्ष आदि पवित्र अवसरों पर हम पितृ तर्पण करें, पितृ पूजन करें, श्राद्ध करें, वस्तुतः पितरों के प्रति की जाने वाली श्रद्धा का नाम ही श्राद्ध है। पितरों की तिथि पर विप्र भोजन करायें। उनके निमित्त दरिद्र नारायण की सेवा, जरूरतमन्दों की मदद एवं गौसेवा करें और सन्तानोत्पत्ति के द्वारा अपने पूर्वजों की वंश की वृद्धि एवं उनकी पद्धति का वर्धन करें तो हम अपने पूर्वज पितरों के आशीर्वाद के पात्र एवं उनके ऋण से मुक्त होने के अधिकारी बनते हैं। अतः इन ३ ऋणों की मुक्ति स्मरण के लिए भी हम जनेऊ में तीन धागे पहनते हैं–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिए उपनयन संस्कार एक नये जन्म के समान माना जाता है, जिसमें व्यक्ति का आध्यात्मिक जन्म हुआ ऐसी मान्यता है। **२७ मार्च से ४ अप्रैल २००६** तक श्रीधाम वृन्दावन फोगला आश्रम में प्रसिद्ध ज्योतिर्विद एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ कलकत्ता निवासी श्रीबिष्णु पाठक (सारस्वत) जी के विशेष भाव एवं श्रद्धा के फलस्वरूप हमारे द्वारा श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव एवं पारायण हुआ। उसी कथान्तर्गत श्रीबिष्णु पाठकजी के चिरंजीव पुत्र आयु. शिवम् आयु. रुद्रम् का अनेक विद्वान् एवं सन्तों की सन्निधि में हमारे द्वारा गायत्री–मंत्र दान एवं उपनयन संस्कार हुआ। इसी प्रकार हिन्दूजनों को इस संस्कार को बहुत महत्व देते हुए इसको जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। अतः संस्कारों से समन्वित जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है।

कहाँ हो प्यारे

घनश्याम तुम्हें ढूंढने जायें कहाँ कहाँ
अपने विरह की याद दिलायें कहाँ कहाँ
तेरी नजर में, जुल्फ में, मुस्कान मधुर में
उलझा है सब में दिल, तो छुड़ायें कहाँ कहाँ
चरणों की खाकसारी में खुद खाक बन गये
अब खाक पै हम खाक रमायें कहाँ कहाँ
जिनको तबीब देख के खुद बन गये मरीज
ऐसे मरीज मर्ज दिखाएँ कहाँ कहाँ
दिन रात अश्रु 'बिन्दु' बरसते हैं मगर
सब तन में लगी आग बुझायें कहाँ कहाँ

परमार्थ निरूपण

● पं. श्री किशनलाल शास्त्री

।। श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।

श्रीगोकर्ण उवाच
देहेऽस्थिमांसरुधिरेऽभिमतिं त्यज त्वं
जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभंगनिष्ठं
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः।।७६।।
धर्मं भजस्व सततं त्यज लोकधर्मान्
सेवस्व साधुपुरुषाञ्जहिकाम तृष्णाम्।
अन्यस्य दोषगुणचिन्तनमाशुमुक्त्वा
सेवाकथारसमहो नितरां पिबत्वं।।८०।।

भा. मा. ७६–८०

श्रीगोकर्ण जी कहते हैं कि पिताजी यह शरीर हड्डी मांस और रुधिर का पिण्ड है। इसे आप अपना मानना छोड़ दें और स्त्री पुत्रों को अपना कभी न मानें। इस संसार को रात–दिन क्षण भंगुर देखें। इसकी किसी भी वस्तु को स्थाई समझकर राग न करें। बस एक मात्र वैराग्य राग के रसिक होकर भगवान् की भक्ति में लगे रहें।।७६।।

भगवत् भजन सबसे बड़ा धर्म है। निरन्तर उसी का आश्रय लिये रहें। अन्य सब प्रकार के लौकिक धर्मों से मुख मोड़ लें। सदा साधुजनों की सेवा करें। भोगों की लालसा को पास न फटकने दें। जल्दी से दूसरों के गुण दोषों का विचार करना छोड़ दें। एक मात्र श्रीभगवान् की कथा एवं भगवत् सेवा के रस का पान करें।।८०।।

भगवत् कथा श्रवण से संसारासक्ति मिट जाती है तथा श्रीकृष्ण स्वरूप हृदय में विराजित हो जाता है तथा लीलाओं का दर्शन होने लगता क्योंकि हृदय में से जड़ता की ग्रंथि का छेदन हो गया हृदय निर्मल हो गया है। स्वच्छ दर्पण में जैसे प्रतिबिम्ब दीखने लगा है। यथा :

भिद्यते हृदयग्रंथिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि दृष्ट एवात्मनीश्वरे।।

१–२–२१ भागवत – प्रथम स्कन्ध

बड़े–बड़े विद्वानों ने अनुभव करके लिखा है –

अतो वै कवयो नित्यं भक्तिं परमया मुदा।
वासुदेवे भगवति कुर्वन्त्यात्मप्रसादनीम्।।

भा. १–२–२२

महाकवि सूरदासजी का अनुभव :

कह्यो शुकमुनि विचार
हरि की भक्ति वर्तत है, युग युग अनिधर्म दिन चार
चिन्ता तजौ परीक्षित राजा सुन सुख सीख हमार
कमल नैन की लीला गाओ कटत उनके विकार
सतयुग सत्–त्रेता तप कीने द्वापर पूजा चार
सूर भजन कलि केवल कीजै लज्जा कान निवार

यथा –

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्।।

भा. १२–३–५२

भगवत् कथा जीवन है। **कथामात्रैक जीवनः**। एक क्षण कथा के बिना कोटिक जलन ताप संताप का अनुभव होता है।

यथा –

तव कथामृतं तप्त जीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।।

भा. १०–३१–६

महापुरुषों का मत है पुण्यश्लोक शिरोमणि श्रीहरि के गुणों का गान करना वाणी का, विद्वानों के मुख से भगवत् कथामृत का पान करना ही कानों का सबसे बड़ा लाभ है।

एकान्तलाभं वचसो न पुंसां
शुश्लोकमौलौगुणवाद माहुः।
श्रुतेश्च विद्वद्भिरूपा कृतायां
कथासुधायामुप सम्प्रयोगम्।।

भागवत

श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन एवं श्रवण अशेष दुःख राशि को शान्त कर देता है। फिर हमारे हृदय में चरण कमल की रज सेवन करने का प्रेम जग पड़े तो कहना ही क्या है।

अशेष संक्लेश समं विद्यते
गुणानुवाद श्रवणं मुरारे।
कुतः पुनस्तच्चरणारविन्द
पराग सेवा रतिरात्मलब्धा।।

– भागवत

संसार में पशुओं को छोड़कर अपने पुरुषार्थ का सार जानने वाला ऐसा कौन पुरुष होगा जो कि आवागमन छुड़ाने वाली भगवान् की प्राचीन कथाओं में से किसी भी अमृतमयी कथा का अपने कर्णपुटों से एक बार पान करके फिर उनकी ओर से मन को हटा लेगा।

को नाम लोके पुरुषार्थ सारवित्
पुरा कथानां कल्मशापहं।।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः

ये भागवतों के सहज लक्षण हैं

भागवत कथा सुधा
आपीयकर्णांजलिभिमवाप हा
महोविरंजेत विना न रेतरम्।

भागवत

कृष्ण शक्ति देह धारे कृष्ण ही चलावै
सत्यं शिवं सुन्दरम् प्रिय जो बनावै
देह में जो धातु रूप है यह कृष्ण शक्ति करे
सब याही से मोह अरु प्रेम भक्ति
निकसि जाय जब यह कथा धातु
कौन पुत्र पिता काको
कौन भ्रात मातु कृष्ण शक्ति है
है धातु यासों यह विचारो।।
करो कोई खण्डन यह मत है हमारो।
कृष्ण माता कृष्ण पिता कृष्ण ही है प्राणधन
कृष्ण चरनन धरौ निशदिन ध्यान।
कृष्ण नाम अन्त समय जायगा तुम्हारे संग
और सब यहीं रह जाय तेरो रंग ढंग।

इत्यादि

अध्यात्म उदाहरणों से मननशील होकर अध्यात्म सुपंथ के पथिक होकर हृदय में ही श्रीकृष्ण का दर्शन सुलभ हो जाय यही भागवत संदेश है।

यथा तथा यदा तदा तथैव कृष्ण सत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।

।। शुभं भूयात्।।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे !
हे नाथ नारायण वासुदेव।।

सनातन धर्म भास्कर

● पं. श्रीरामानुज शास्त्री

।। श्रीमते रामानुजाय नमः।।

वन्दे सनातनं ब्रह्म वन्दे धर्मं सनातनम्।
लक्ष्मी नारायणं वन्दे ब्रह्म रूपं सनातनम्।।1।।
रामं रामानुजं वन्दे कृष्णं कृष्णाग्रजं तथा।
वन्दे रामानुजाचार्यं शेषरूपं सनातनम्।।2।।
वन्दे धर्मोपदेष्टारं नारदं सुर पूजितम्।
नारायणेन सम्प्रोक्तं वन्दे धर्म सनातनम्।।3।।
विधाय न ध्यानम् धर्म धर्मयोः
कृतो न धर्मो मनुजेन येन चेत्।
पुराण गीतानिगमाग्मादिना
विधर्मपुंसा पठितेन तेन किम्।।4।।

सनातन धर्म भास्कर–

सनातन धर्म भास्कर का अर्थ होता है सनातन धर्म रूपी सूर्य अर्थात् सनातन धर्म सूर्य की तरह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्रकाश डालने वाला है। सनु दाने धातु से सनातन शब्द बनता है **सनुते ददाति धर्मार्थ काममोक्षान् इति सनम् दानम्। सनम् आतनोति इति सनातनः** अथवा **नादेन सहितः सनादनः। सनादनः एव सनातनः।** इसका अर्थ हुआ कि जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को जीव की वासना के अनुसार प्रदान करता है, अथवा जो अनहद नाद के रूप में है–वह सनातन कहलाता है। परब्रह्म परमात्मा सनातन का वाचक है। उस परब्रह्म परमात्मा के द्वारा जीव मात्र के इहलौकिक, पारलौकिक कल्याण के लिए जिस साधन का प्रकाशन हुआ वही सनातन धर्म है। परमब्रह्म परमात्मा अपने आश्रित जीवों को चतुर्विध पुरुषार्थ को प्रदान करता है तथा अखण्ड नाद के रूप में सारी सृष्टि में पूर्ण रूप से व्याप्त है। जिसमें योगी लोग ध्यान लगाते और दुःखमय संसार से मुक्त हो जाते हैं। उस परमात्मा का नाम भी सनातन है।

धर्म शब्द का अर्थ होता है **'धयते' अनेन धरति वा एनं इति धर्मः। धारणात् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयति, प्रजाः।**

''महाभारत''

जो साधन, व्यक्ति, समाज राष्ट्र तथा सम्पूर्ण लोक को धारण करता है, वह धर्म कहलाता है। जो सनातन परमात्मा से प्रकाशित हुआ है वह सनातन धर्म है। अथवा सनातन जीव को सनातन प्रकृति, सनातन काल से सनातन परमात्मा से विमुख बना रखा है। उसी सनातन जीव को, उसी सनातन परमात्मा से सनातन काल के लिए मिला देने वाला जो साधन है वही सनातन धर्म है।

भास्कर का अर्थ होता है–**भा–प्रभा–प्रकाशः तत् करोति इति भास्करः।** जो सारे ब्रह्माण्ड में प्रकाश फैलाता है उसे भास्कर कहते हैं। भास्कर अर्थात् सूर्य। इस तरह सनातन धर्म रूपी सूर्य।

अमावस्या की घोर अन्धेरी रात्रि में कुछ भी दिखाई नहीं देता है। लाखों तारों के उदय होने पर भी चारों तरफ अन्धकार ही छाया रहता है। उस घोर अन्धकार में एक तारार्चिः (टार्च) कोई जलाता है, तो बहुत थोड़ा प्रकाश होता है। जिसमें बहुत ही अल्प वस्तुएँ दीखती हैं। उससे भी कुछ अधिक शक्ति का बिजली का बल्व जलाया जाय तो कुछ अधिक प्रकाश होता है और तारार्चिः की अपेक्षा एक बल्व (लट्टू के) प्रकाश से

कुछ अधिक पदार्थ दीखने लगते हैं। उससे अधिक 100 पावर का लट्टू जलाया जाय तो उसके प्रकाश से और भी अधिक प्रकाश दिखाई देता है। यह तो हुआ अमावस्या की रात्रि के घोर अन्धकार में प्रकाश के प्रभाव का वर्णन।

पूर्णिमा की रात्रि में जब पूर्ण प्रकाशमय चन्द्रमा का उदय होता है तो सारे विश्व में प्रकाश छा जाता है। जिसके प्रकाश में सारे पदार्थ विशेष रूप से दीखते हैं। इसमें भी यदि चन्द्रमा के ऊपर बादल का आवरण नहीं हो तब। चन्द्रमा की कान्ति में कितना भी प्रकाश हो उस रात्रि को दिन नहीं कहा जा सकता है। परन्तु जब प्रचण्ड मार्तण्ड नामा भगवान् भास्कर का उदय होता है तो उसके प्रकाश में एक–एक परमाणु दीखने लगता है।

भगवान् भास्कर पृथ्वी पर अपने प्रकाश को प्रसारित करके पहाड़, खाई, वृक्ष, तृण, नदी, नाला, मार्ग, अमार्ग, सब कुछ दिखाने लगते हैं। भगवान् भास्कर के प्रचण्ड प्रकाश में कहीं नाना प्रकार की कोठियों से अलंकृत बड़े–बड़े शहर दिखाई देते हैं। कहीं–कहीं किसानों की बस्तियाँ दिखाई देती हैं। कही–कहीं गरीबों की झोपड़ियाँ दिखाई देती हैं। कहीं–कहीं बड़े–बड़े विशाल विविध प्रकार के वृक्षों से अलंकृत वन भी दिखाई पड़ते हैं। तो कहीं–कहीं विभिन्न प्रकार की औषधियों से अलंकृत किसानों के खेत दिखाई देते हैं। इन्हीं भगवान् भास्कर के प्रकाश में कहीं–कहीं हाथी, ऊँट, घोड़े आदि बड़े–बड़े जानवर एवं पशु–पक्षी आदि दिखाई देते हैं। कहीं–कहीं चींटी, चींटा से लेकर अत्यन्त सूक्ष्म कीटाणु भी दिखाई पड़ जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि पृथ्वी के ऊपर विभिन्न विषमताएँ दिखाई देती हैं। इन विषमताओं को देखकर यदि कोई कहता है कि सब विषमताएँ सूर्य की बनाई हुई हैं तो उससे बढ़कर अथवा दूसरा कोई मूर्ख नहीं हो सकता है। भगवान् भास्कर किसी भी प्रकार की विषमताओं की रचना नहीं करते हैं। अपने–अपने कर्म के अनुसार स्वयं विरचित जो विषमताएँ हैं उनको अपने प्रकाश से प्रकाशित करके दिखाते हैं। इसी प्रकार से सनातन धर्म रूपी सूर्य किसी विषमता की रचना करके प्राणियों में परस्पर भेद भाव को उत्पन्न नहीं करते, स्वयं अपने–अपने कर्म से विनिर्मित प्राणियों में जो विषमताएँ–विभिन्नताएँ हैं उनको दिखा देते हैं। जीव अनन्त हैं। चेतन आत्मा के स्वरूप से सब एक हैं परन्तु उस विशुद्ध आत्मा के ऊपर अविद्या का आवरण पड़ जाने से उनमें विषमताएँ आ गई हैं।

सृष्टि के आरम्भ में तथा अन्त में कोई भी विषमताएँ नहीं रह जातीं। सृष्टि प्रलय के मध्य स्थिति काल में ये विषमताएँ–विभिन्नताएँ स्वतः बढ़ जाती हैं। स्थिति काल की शोभा विषमताओं–विभिन्नताओं से ही है। प्रलयकाल में समस्त जीव सूक्ष्म शरीर से परमात्मा में विलीन होकर विश्राम करते हैं। और जब प्रलय काल की अवधि समाप्त हो जाती है तो उस सृष्टि काल का आरम्भ होता है। तब सब अपने–अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न जातियों में स्थूल रूप से जीव जन्म लेते हैं। सृष्टि का आरम्भ ही विषमता से होता है। प्रलय का आरम्भ समता से होता है। इसके लिए सृष्टि प्रलय के स्वरूप का दिग्दर्शन करा देना उचित है। जब परमात्मा को प्रलय के बाद सृष्टि करने की इच्छा होती है, तब काल, कर्म, तथा स्वभाव इन तीन शक्तियों को अपने अधीन में करते हैं। तीनों गुणों की साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं। काल शक्ति प्रकृति में क्षोभ उत्पन्न करके तीनों गुणों को विभक्त करती हैं, स्वभाव शक्ति, रूपान्तरित करती हैं, अर्थात् एक रूप से दूसरे रूप में परिणत करती हैं, और जीवों के अदृष्ट कर्म फलोन्मुखी

होते हैं, भगवान् लक्ष्मीपति श्रीनारायण परमात्मा प्रकृति का ईक्षण करते हैं, अर्थात् अपने संकल्प का विषय बनाते हैं तो काल के प्रभाव से तीनों गुण विभक्त होते हैं। उससे महत्तत्व (समष्टि बुद्धि) उत्पन्न होती है। महत्तत्व ही ज्ञान शक्ति प्रधान महत्तत्व कहलाता है तथा क्रिया शक्ति प्रधान सूत्रात्मा कहलाता है। जब ईश्वर के संकल्प का विषय बना हुआ महत्तत्व काल कर्म तथा स्वभाव से विकृत होकर अहंकार के रूप में परिणित होता है, तब वह तीन प्रकार का होता है, सात्विक, राजस तथा तामस। तामस अहंकार को भूतादि भी कहा गया है क्योंकि पंचमहाभूतों का आदि कारण यही है। ईश्वर की इच्छा से काल कर्म तथा स्वभाव के प्रभाव से तामस अहंकार में विकार होता है तो आकाश तत्व की उत्पत्ति होती है जिसका गुण अथवा तन्मात्रा शब्द होता है। आकाश के विकृत होने पर वायु तत्त्व की उत्पत्ति होती है। जिसका गुण स्पर्श है। वायु के विकृत होने पर अग्नि तत्व की उत्पत्ति होती है जिसका गुण रूप होता है, जल के विकृत होने पर पृथ्वी तत्व की उत्पत्ति होती है जिसका गुण गन्ध होता है, आकाशादि पांच महाभूत कहलाते हैं और शब्द आदि तन्मात्राएँ कहलाते हैं। कारण का गुण कार्य में आता है इस नियम से वायु में दो गुण हैं स्पर्श, शब्द अग्नि में तीन गुण हैं रूप, स्पर्श, शब्द, जल में चार गुण हैं रस, रूप, शब्द, स्पर्श, पृथ्वी में पांच गुण हैं गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द, इसीलिए पृथ्वी को विशेष भी कहा गया है राजस अहंकार से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ होती हैं, सात्विक अहंकार से इन इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवता होते हैं, इन्हीं तत्वों से चराचर प्राणियों की उत्पत्ति होती है। अब इसी प्रतिलोम क्रम से महाप्रलय होता है। महाप्रलय काल में लगातार सौ वर्ष तक वर्षा नहीं होती। उसके बाद सौ वर्ष तक लगातार संकर्षण भगवान् के मुख से प्रलयानल प्रकट होता है और उससे पाताल से लेकर सत्यलोक पर्यन्त समस्त लोक भस्म हो जाते हैं और बाद में सारा ब्रह्माण्ड एकार्णव हो जाता है। कार्य अपने कारण में विलीन हो जाता है। अन्न अपने कारण बीज में विलीन हो जाता है। बीज पृथ्वी में विलीन हो जाता है। पृथ्वी जल में, जल अग्नि में, अग्नि वायु में, वायु आकाश में, आकाश भूतादि तामस अहंकार में और दस इन्द्रियाँ राजस अहंकार में और इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवता सात्विक अहंकार में विलीन हो जाते हैं। त्रिविध अहंकार महत्तत्व में महत्तत्व त्रिगुण में, त्रिगुण प्रकृति में, प्रकृति पुरुष में, पुरुष परमात्मा में विलीन हो जाते हैं। परमात्मा किसी में विलीन नहीं होते, सब के प्रलय की अवधि पर ब्रह्म परमात्मा लक्ष्मीपति भगवान् श्रीनारायण ही हैं। इस प्रकार प्रतिलोम क्रम से प्रलय को बताया गया है, प्रलय भी चार प्रकार के कहे गये हैं। नित्य, नैमित्तिक, प्राकृतिक तथा आत्यन्तिक, इस प्रकार सनातन धर्म का स्थापक प्रवर्तक वेद शास्त्र, पुराण तथा इतिहास है। भारतवर्ष का इतिहास किसी व्यक्ति विशेष की महिमा को लेकर अधूरे समय का इतिहास नहीं है, भारतवर्ष का इतिहास सृष्टि काल के आरम्भ का इतिहास है और केवल स्थूल किसी एक लोक का इतिहास नहीं है। चतुर्दश भुवनात्मक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का इतिहास है। इसमें बहुत से ऐसे सूक्ष्म लोकों का दर्शन है जिसको स्थूलदर्शी अज्ञानी लोग नहीं देख सकते। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि किन–किन तत्वों से किस–किस प्रकार से होती है। पूर्ण रूप से दिखाया गया है। जिसमें तीन तत्व प्रधान हैं, जड़ प्रकृति, चेतन पुरुष तथा जड़ चेतन का नियन्ता परमात्मा, परमात्मा के संकल्प से चेतन से अधिष्ठित प्रकृति परिणत हो होकर छब्बीस (26) तत्वों के रूप में

प्रकाशित होती है। प्रकृति का परिणाम ही सारा ब्रह्माण्ड है, जड़, चेतन में अन्तर्यामी रूप से परमात्मा का निवास है। इस विश्व का अभिन्न निमित्तोपादान कारण परमात्मा ही है। वे ही परमात्मा चराचर प्राणियों के अन्तर्यामी रूप से विभिन्न रूपों में प्रतीत होते हैं। उन्हीं की बलवती माया से मोहित जीव संसार चक्र में पड़ कर अपने कर्म के अनुसार सुख–दुःख को भोगता हुआ भटकता रहता है। जब तक मायापति की शरण में नहीं जाता तब तक उनकी माया से मुक्त नहीं होता।

इस प्रकार वैदिक सनातन धर्म रूपी सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश में सृष्टि का परमाणु परमाणु दिखता है, सृष्टि स्थिति काल में ये विषमताऐं, स्वभावतः उत्पन्न होती हैं तथा दिखती हैं। जैसे संसार की सम्पूर्ण वस्तु को दिखाना सूर्य का कार्य है इसी प्रकार सारी वस्तुओं को दिखाना वैदिक सनातन धर्मरूपी सूर्य का कार्य मात्र है। विषमताओं की रचना करना नहीं इसलिए जो लोग मानते हैं कि सनातन धर्म में नाना प्रकार की जातियों की रचना करके विषमताएँ की गई हैं और एक दूसरे से विद्वेष फैलाया गया है। ऐसी मान्यता भ्रम तथा मूर्खतापूर्ण है। सनातन धर्म की बहुत विशाल दृष्टि है। जिसमें विश्वप्रपंच का बहुत बड़ा विशाल दर्शन है। केवल स्थूल लोक, स्थूल भोग तथा स्थूल मानव, पशु पक्षी इत्यादि का दर्शन नहीं है प्रत्युत दिव्य लोक तथा दिव्य पुरुषों का दर्शन है। पृथ्वी के ऊपर तथा नीचे के लोकों का दर्शन तो बहुत दूर है पृथ्वी का पूर्ण रूप से कोई दर्शन नहीं कर सकता है। इस धरातल पर दिव्यलोक ही प्लक्ष शाल्मली इत्यादि छः द्वीप हैं। जिनका दर्शन स्थूल दृष्टि से कदापि नहीं हो सकता। इसके लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है। जैसे सभी शरीरों से सभी भोग नहीं भोगे जा सकते। वैसे ही सभी शरीरों से सभी लोक नहीं देखे जा सकते। जैसे स्वर्ग लोक को पुण्य के बिना नहीं देखा जा सकता इसी प्रकार पुण्य के बिना प्लक्ष आदि द्वीपों को नहीं देखा जा सकता। मनुष्य शरीर के भोग का अनुभव पशु पक्षी का शरीर नहीं कर सकता, पशु पक्षी के शरीर का भोग मनुष्य का शरीर नहीं कर सकता, खीर, मालपुआ, रबड़ी, रसगुल्ला, गुलाब जामुन, इन पदार्थों का निर्माण तथा इनका स्वाद इनके गुण का अनुभव पशु पक्षी नहीं कर सकते मनुष्य ही कर सकता है। इसी प्रकार गेहूँ का भूसा तथा हरे–हरे घास में क्या स्वाद है, क्या विटामिन है और कैसे उसको हजम किया जा सकता है। इसको पशु पक्षी ही जान सकता है मनुष्य नहीं जान सकता। जब इसी धरातल पर होने वाले मनुष्य पशुपक्षी इत्यादि परस्पर में एक दूसरे के भोग, वैभव, सुख–दुःख, स्वभाव प्रभाव तथा गुण दोष को नहीं जान पाते हैं तो अन्य दिव्य लोकों के भोग वैभव, स्वभाव गुण दोष को कैसे जान सकते हैं ? उनको जानने के लिए तो शास्त्र रूपी चक्षु की ही आवश्यकता पड़ती है।

मनुष्य मात्र में अपने अज्ञान के कारण नाना प्रकार का संशय भरा हुआ है। जैसे अपने आप में ही संशय भरा है कि चेतन आत्मा है कि नहीं है। परमात्मा है कि नहीं है। पुण्य पाप है कि नहीं है। पुनर्जन्म है कि नहीं है। स्वर्ग नरक है कि नहीं है, इन सारे संशयों को मिटा देने वाला तथा छिपी हुई वस्तु को प्रत्यक्ष करा देने वाला सबका नेत्र शास्त्र ही है इसलिए जिसको शास्त्र का ज्ञान नहीं है वही अन्धा है। जैसे–प्रमाण

''अनेकासंशयोच्छेदी परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनम् शास्त्रम् यस्यनास्त्यन्ध एव सः।।

महाभारत.

■ क्रमशः

"साधुनोति परम कार्यमिति"–साधु

● विश्वविख्यात भागवत भास्कर
पं.श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुर जी)

जो बिगड़े को सुधारे और सुधरे हुए को साधकर भगवत् अनुरागी बनाये वही साधु है। साधुओं के लक्षण श्रीमद् भागवत में प्रभु ने बताये हैं यथा–

तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्व देहिनाम्।
अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधु भूषणाः।।

भा. ३–२५–२१

जो बड़े से बड़े कष्ट को सहजता में सह ले, जिसकी दृष्टि करुणामयी है, जो कोमल स्वभाव का है, जो सबके प्रति सौहार्द भाव रखता है जो अजात शत्रु जो किसी को अपना शत्रु न समझे, जो शान्त स्वभाव का है ऐसे लक्षणों से समन्वित जिसका जीवन है, वही साधु या सन्त है। इसीलिए मेरे गोविन्द को सन्त प्रिय लगते है।

सबहि मान प्रद आप अमानी

अर्थात हमेशा जो दूसरों को सम्मान दें, एवं अपने सम्मान की कभी अभिलाषा ही न रखें ऐसे सन्त गोविन्द को प्रिय होते हैं। उनका मन भगवन्मय होता है इसलिये सांसारिक सम्मान आदि की ओर उनका ध्यान कभी जाता ही नहीं है एवं किसी भी प्राणी के जीवन में आयी हुई तकलीफ को सन्त अपनी मानकर उसका निराकरण करने की चेष्टा करते हैं एवं व्यक्ति भी दुःख की निवृत्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना भी करते हैं। गोस्वामी तुलसी दास जी ने लिखा है।

सन्त हृदय नवनीत समाना
कहां कविन पर कहहि न जाना
निज परताप द्रवहिं नवनीता
पर दुःख द्रवहि सन्त सुख नीता

अर्थात् सन्तों का हृदय नवनीत के समान है ऐसा कवियों ने लिखा, पर पूर्ण रूप से लिख नहीं पाये क्योंकि नवनीत (माखन) अपने ताप से पिघलता है परन्तु सन्त का हृदय रूपी माखन तो दूसरे के ताप (दुःख) से पिघल जाता है।

शास्त्रीय दृष्टि में परोपकार सर्वोच्च धर्म भी है। यथा–**"परोपकाराय सतां विभूतय"** एवं **"परहित सरिस धर्म नहीं भाई पर पीड़ा सम नहीं अधमाई"** अतः जिसका रहन सहन प्रत्येक क्रिया समाज को दिशा एवं मानव की दशा सुधारने में लगे वही सच्चा सन्त है। भगवान् ऋषभ देव ने अपने पुत्रों को उपदेश देते समय दो रास्ते बताये। एक अन्धकार (नरक) का रास्ता, दूसरा प्रकाश (मुक्ति) का रास्ता। उसमें महापुरुषों की सेवा को मुक्ति का रास्ता बताया एवं शराबी, वैश्याचारियों के संग को नरक का रास्ता कहा। पुत्रों के पूछने पर प्रभु ऋषभ देव ने महापुरुष सन्तों के लक्षण बताये यथा–

महान्तस्ते समचित्ताः प्रशान्ता।
विमन्यवः सुहृदः साधवो ये।।

भा. ५–५–२

महान् वही है जिसका चित सम है प्रशान्त जिसका मन है सबके प्रति जिसका सौहार्द भाव है ऐसे महापुरुष की सेवा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। महात्मा के परिधान कैसे हैं वह महत्व पूर्ण नहीं, शरीर गोरा है या काला, जंगल में रहता है या घर में ये भी महत्वपूर्ण नहीं। उसका आचरण, विचार, व्यवहार कैसा है वह महत्वपूर्ण है। यदि बुद्धि भगवन्मयी है, दृष्टि गोविन्दमयी है, व्यवहार राममय है तो निश्चित रूप से वह सन्त

वन्दनीय एवं भगवत् स्वरूप है और ऐसे लक्षणों से समन्वित जिसके विचार हैं यह परमात्मा का द्योतक भी है। चतुर्थ स्कन्ध में आदरणीय स्वायम्भुव मनु ने श्री ध्रुव जी को उपदेश देते हुए भगवान की प्रसन्नता के भक्त लक्षण बताये हैं।

तितिक्षया करुणया मैत्र्या च खिल जन्तुसु।
समत्वेन च सर्वात्मा भगवान् सम्प्रसीदति।।

भा. ४–११–१३

अतः सर्वजन हित एवं सर्वजन सुख सर्वजन प्रसन्नता में जो अपनी सहभागिता प्रदर्शित करें किसी के दुर्गुणों में अपनी नाराजगी प्रगट न करते हुए सहज भाव से दुर्गुणों का सद्गुणों में परिवर्तित करने का सत् प्रयास करते हुए अपना सहज आशीर्वाद प्रदान करे, यही भगवान की प्रसन्नता का द्योतक हैं। साधु किसी को भयभीत नहीं करता किसी से विरोध भी नहीं करता अपनी सहज दृष्टि से सभी के कल्याण की कामना करता है। क्योंकि जब समस्त संसार ही भगवत रूप है तो विरोध किससे करें। सन्त भक्तों के लक्षण बताते हुए भगवान शिव ने शिवा से कहां–

उमा जे राम चरण रत विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभु मय देखहि जगत केहि सन करहि विरोध।।

जब सम्पूर्ण संसार गोविन्द का स्वरूप है तो विरोध किससे करे और क्यों करें। अतः सहज वृत्ति का साधु भगवत् स्वरूप होता है क्योंकि उसने अपने कर्मों को भगवान् को समर्पित किया होता है– ऐसे साधु से द्वेष करने वाला परमात्मा का ही द्वेषी है और साधु से प्रेम करने वाला गोविन्द का प्रिय होता है। भगवान शुकदेव स्वामी ने दशम स्कन्ध पूर्वार्द्ध में साधु की महिमा बताते हुए यह कहा कि–

हिसः स्वपापेन् विहिसतः खलः
साधो समत्वेन भयात् विमुच्यते

अर्थात् हिंसक व्यक्ति द्वारा साधु के प्रति किये गये अपमान एवं हिंसा स्वयं नष्ट हो जाता है और साधु अपनी भगवद् बुद्धि एवं समदृष्टि के फलस्वरूप भय से विमुख हो जाता है। क्योंकि गोविन्द प्रतिक्षण, प्रतिफल साधु की रक्षा करता है। भगवान् साधु की रक्षा इसलिये नहीं करते कि वह साधु है बल्कि साधु की भगवन्मयी एवं समदृष्टि स्वयं भगवत् रूप से उसकी रक्षा कराती है अतः संत भगवंत का स्वरूप हैं।

उत्तम साधु

साधु वह है जो अच्छाई को अति आदर और उदार भाव से ग्रहण करे चाहे वह जहाँ भी हो, जिस भी मत में हो या जिस भी सम्प्रदाय में हो।

अपने सम्प्रदाय की उन बातों को ज्यादा नहीं उछालना चाहिए जो सर्व–साधारण को खलती हैं। अपने सम्प्रदाय की उपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए। साधु को विद्यावान् होना चाहिए। विद्यावान् वह है जो प्रतिदिन विद्याभ्यास में लगा रहता है। तत्पश्चात् साधु का यह भी कर्त्तव्य है कि उन शिक्षाओं को अपने छात्रों को प्रदान करे और धर्मभाव बढ़ाने वाली शिक्षा के लिए प्रोत्साहन पुरस्कारों की व्यापक योजनाएँ बनाये जिससे उस शिक्षा में छात्रों की रुचि और श्रेष्ठता की भावना बनी रहे।

ज्ञान, कर्म तथा भक्ति

● डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया

परब्रह्म की प्राप्ति के साधन—रूप में श्रुतियों में अनेक मार्ग बतलाये गये हैं, जिनमें ३ प्रमुख हैं : ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग तथा भक्ति मार्ग। तीनों मार्ग अपने—अपने में प्रशस्त हैं और भगवत्प्राप्ति में सहायक हैं। किन्तु वैष्णव सम्प्रदायों में भक्तिमार्ग को ही श्रेयस्कर एवं सुगम बताकर निरूपण किया है। भक्त को किसी दूसरे मार्ग की सहायता की अपेक्षा नहीं रहती लेकिन अन्य मार्गों के साधकों को भक्ति की अपेक्षा रहती है इसे शास्त्र प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया गया है।

किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए सुनिश्चित और निर्भर योग्य उपाय का निर्णय करने के लिए मुख्यतः पाँच बातों का विचार करना होता है।

१— उक्त उपाय के बारे में शास्त्र में कोई अन्वयविधि है कि नहीं, अर्थात् उस उपाय का अवलम्बन करने से अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होगी—ऐसे वचन या प्रमाण शास्त्र में हैं कि नहीं।

२— उक्त उपाय के सम्बन्ध में कोई व्यतिरेक विधि है या नहीं, अर्थात् उस उपाय के अवलम्बन किए बिना अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति नहीं हो सकती—ऐसा भी कोई शास्त्र वचन है कि नहीं।

३— वह उपाय अन्य—निरपेक्ष है कि नहीं, अर्थात् वह उपाय अभीष्ट वस्तु को प्रदान करने में स्वच्छन्द है या किसी और वस्तु की अपेक्षा रखता है। यदि वह किसी और वस्तु की अपेक्षा रखता है तो उस वस्तु के न मिलने पर वह अपना फल या अभीष्ट वस्तु को प्रदान नहीं कर सकेगा।

४— उक्त उपाय में सार्वत्रिकता है कि नहीं, अर्थात् वह सर्वत्र अपनाया या प्रयोग किया जा सकता है कि नहीं। तात्पर्य यह है कि उस उपाय को सब लोग अपना सकते हैं कि नहीं, सब स्थानों पर, सब अवस्थाओं में उसका प्रयोग या आचरण किया जा सकता है कि नहीं।

५— उक्त उपाय में सदातनत्व है कि नहीं, अर्थात् उस उपाय का हर समय अवलम्बन किया जा सकता है कि नहीं। जिस उपाय में सदातनत्व नहीं होगा, समय की प्रतिकूलता के या अनुकूलता के अभाव में अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति में विघ्न होगा।

उपर्युक्त पांचों बातें जिस उपाय या साधन में हों, वही उपाय ही अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति का सुनिश्चित एवं दृढ़ उपाय या सर्वश्रेष्ठ उपाय माना जा सकता है। ऐसा ही उपाय जिज्ञास्य है जैसा कि श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है—

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्वजिज्ञासुनात्मनः।
अन्वय—व्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा।।

"भगवान् श्रीनारायण ने श्री ब्रह्मा जी से कहा है—हे ब्रह्मा विधि—निषेध के द्वारा जो सदा, सर्वस्थान पर विद्यमान रहता है, मेरे तत्त्व को जानने के इच्छुक व्यक्ति उसी उपाय की ही जिज्ञासा करते हैं।"

ज्ञानमार्ग–

सर्वप्रथम ज्ञानमार्ग में इन पांचों लक्षणों को देखते हैं। जो लोग जीव एवं ब्रह्म की अभिन्नता का चिन्तन करते हुए निर्विशेष–निराकार–निर्गुण ब्रह्म के साथ सायुज्य की कामना करते हैं, ब्रह्म में लीन हो जाना चाहते हैं, उनके साधन पथ को ही ज्ञानमार्ग कहा गया है।

श्रुति कहती है–"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति"– ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म ही हो जाता है–ब्रह्म में लीन हो जाता है–ब्रह्म चिदानन्द स्वरूप है, उसमें मिलकर ज्ञानी चिदानन्द को प्राप्त करता है। यह ज्ञानमार्ग के सम्बन्ध में "अन्वय–विधि" है।

परन्तु ज्ञानमार्ग के साधन के बिना आत्यन्तिकी दुखनिवृत्ति नहीं होती, अथवा ब्रह्मानुभव हो ही नहीं सकता–ऐसा कोई भी शास्त्र वचन नहीं है। अतः ज्ञानमार्ग में "व्यतिरेक विधि" नहीं है।

ज्ञान में "सार्वत्रिकता" तथा "सदातनत्व" भी नहीं है क्योंकि सब लोग ज्ञान के अधिकारी नहीं हैं। केवल मात्र शुद्ध चित्त वाले लोग ही ज्ञान का साधन करने के लिए अधिकारी हैं। ज्ञान की सिद्धि हो जाने पर ज्ञान लुप्त हो जाता है। ज्ञान ही के अनुशीलन के प्रति विराग हो जाता है। अतः ज्ञान में सदातनत्व नहीं है।

ज्ञान में "अन्यनिरपेक्षता" भी नहीं है। ज्ञान अपना फल प्रदान करने में अर्थात् सायुज्य मुक्ति प्रदान करने में भक्ति की अपेक्षा रखता है। श्रीमद्भागवत में प्रमाण है–

श्रेयः सृतिं भक्तिमुदस्य ते विभो,
क्लिश्यन्ति ये केवल बोध लब्धये।
तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते,
नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम्।।
(श्रीमद्भागवत १०/१४/४४)

'श्रीब्रह्मा जी कहते हैं–हे विभो ! सर्वमंगलमय आपकी भक्ति के मार्ग को छोड़कर जो लोग केवल ज्ञान प्राप्ति के लिए क्लेश उठाते हैं, चावल रहित छिलकों को कूटने वाले व्यक्ति की तरह उनके हाथों केवल क्लेश ही पड़ता है, और कुछ भी उन्हें प्राप्त नहीं होता।"

भगवान् ने स्वयं श्रीमद्भगवद्गीता १२/५ में कहा है कि जो निर्विशेष–निराकार ब्रह्म का चिन्तन करते हैं, उनको अधिकतर क्लेश ही प्राप्त होता है, क्योंकि देह का अभिमान रहने से निर्विशेष विषयक गति दुखपूर्वक ही प्राप्त की जाती है। न ही देहाभिमान निवृत्त होता है और न ही निर्विशेष ब्रह्म में स्थिति प्राप्त हो सकती है।

इस प्रकार अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि भक्ति की सहायता के बिना ज्ञान मार्ग का साधन अपना फल प्रदान करने में असमर्थ है। अतः ज्ञान में "अन्यनिरपेक्षता" भी नहीं है।

कर्ममार्ग–

कर्म–मार्ग से तात्पर्य यहाँ अनेक प्रकार के विविध अनुष्ठान– यज्ञादिकों से है न कि वर्णाश्रम के धर्म कर्म। ऐसे यज्ञादि कर्मों का फल इस जगत् के पश्चात् अथवा मरने के बाद स्वर्गादि लोकों के सुखों का भोग मात्र है। वह सुख अनित्य कहा गया है क्योंकि जितने दिन तक पुण्य कर्मों का फल रहता है उतने ही दिन तक वहां अवस्थिति रहती है और फिर पुनः उसी मृत्युलोक में आना पड़ता है

तथा जीव फिर से उस जन्म मरण के चक्कर में पड़ जाता है। जैसाकि भगवान् ने स्वयं गीता में कहा है ''क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति''। (श्रीमद्भगवद्गीता ६/२१)

श्रीपाद शंकराचार्य ने भी प्रथम ब्रह्मसूत्र की व्याख्या में कहा है कि इस सूत्र में अग्निहोत्रादि साधन के फल की अनित्यता ही कथन की गयी है। कर्मों के फल से इस संसार में जो सुख प्राप्त होता है वह जैसे नष्ट हो जाता है इसी प्रकार पुण्यों के फल से जो स्वर्गादि लोकों का सुख प्राप्त होता है वह भी नष्ट हो जाता है।

मण्डुकोपनिषत् भी कहता है–''प्लवा ह्येते अदृढ़ा यज्ञरूपा। (मण्डुकोपनिषद् २/७) अर्थात् संसार समुद्र को पार करने के लिए यज्ञरूपी नौका अदृढ़ है अर्थात् असमर्थ है। और भी कहा है–''एतच्छ्रेयो ये अभिनन्दन्ति मूढ़ा जरामृत्युं ते पुनरेवापि (मण्डुकोपनिषद् १/२/७) अर्थात् जो लोग यज्ञादि कर्मों के साधन को श्रेय या मंगलकारी समझकर ग्रहण करते हैं, वे मूर्ख हैं और वे बार बार जरामृत्यु को प्राप्तकर दुखी होते हैं।

इस प्रकार सिद्ध होता है कि कर्म मार्ग द्वारा भगवत् प्राप्ति असम्भव है। इन कर्मों के द्वारा तो केवल नाशवान भोग सुखों की प्राप्ति होती है। अन्वय–व्यतिरेकादि का भी इसमें नितान्त अभाव है अतः यह मार्ग ग्रहणीय नहीं है।

भक्ति मार्ग–

इन्द्रियों द्वारा अनुष्ठित होने पर भी भक्ति स्वरूपतः स्वरूप शक्ति की वृत्ति विशेष है। सच्चिदानन्द रसस्वरूप परब्रह्म भक्तियोग में ही अवस्थान करते हैं क्योंकि भक्ति में ही श्रीभगवान् को वशीभूत करने की शक्ति है। और जब भक्ति श्रीभगवान् को वशीभूत कर सकती है तो उनकी प्राप्ति तो स्वयंसिद्ध ही है। अन्वय–व्यतिरेकादि पांचों लक्षणों की भक्ति में विद्यमानता देखी जाय–

श्रीगीता में भगवान् ने कहा है–

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।।
(श्रीगीता १८/६५)

अर्थात् हे अर्जुन ! तू मुझमें अपना मन अर्पण कर, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन कर, मुझको नमस्कार कर। तू मुझे प्रिय है मैं सत्य कहता हूँ और प्रतिज्ञा करता हूँ कि ऐसा करने से तू मुझको प्राप्त करेगा।

उपरोक्त उदाहरण भक्ति की अन्वयविधि है और व्यतिरेक विधि के विषय में श्रीमद्भागवत में कहा गया है–

पारंगतोऽपि वेदानां सर्वशास्त्रार्थविद् यदि।
यो न सर्वेश्वरे भक्तस्तं विद्यात् पुरुषाद्यमम्।।

अर्थात् जिसने समस्त वेदों का अध्ययन कर लिया है, जो समस्त शास्त्रों के अर्थों को जानता है, वह भी यदि सर्वेश्वर भगवान् की भक्ति नहीं करता, तो उसे पुरुषों में अधम ही जानना चाहिए।

भक्ति अन्यनिरपेक्ष भी है वह अपना फल प्रदान करने में किसी की अपेक्षा नहीं रखती। श्रीमद्भागवत (११/२०/३२–३३) में कहा गया है–''यज्ञादि कर्मों द्वारा, तपस्या द्वारा, ज्ञान द्वारा, योग द्वारा, दान पुण्यादि धर्मों द्वारा एवं तीर्थ यात्रा–व्रतादि अन्यान्य मंगल अनुष्ठानों के द्वारा जो कुछ फल प्राप्त होता है, केवलमात्र मेरी भक्ति

द्वारा वह समस्त फल अति सहज में प्राप्त किया जा सकता है।

भक्त यदि इच्छा करे तो भक्ति द्वारा स्वर्ग प्राप्त कर सकता है, मुक्ति प्राप्त कर सकता है और भगवद्–धाम में भगवान् के चरणों की सेवा भी प्राप्त कर सकता है।

भक्ति में सार्वत्रिकता भी है–भक्ति के द्वारा कोई भी प्राणी भगवत् प्राप्ति कर सकता है। इसमें जाति, कुल, पात्रापात्र का कोई विचार नहीं है। महाप्रभु श्री चैतन्य ने कहा है कि "नीच जाति का व्यक्ति कृष्ण भक्ति के अयोग्य नहीं है, वह भी भजन के योग्य एवं अधिकारी है। सत्कुल में जन्म लेने वाला ब्राह्मण ही भजन के योग्य हो–ऐसी बात नहीं। जो भी कृष्णभक्ति करता है वही महत्पुरुष है। और जो भक्ति नहीं करता, चाहे वह सत्कुल में उत्पन्न ब्राह्मण ही क्यों न हो, वह अति हीन तुच्छ है अतः उसके जन्म को धिक्कार है। श्रीकृष्ण की भक्ति में जाति कुल, आश्रम वर्ण का कोई भी विचार नहीं है।"(श्रीचैतन्यचरितामृत ३/४/६२–६३)

श्रीमद्भागवत में कहा है–

किरात–हूणान्ध्र–पुलिन्दपुक्कसा
आभीरकंका यवनाः खसादयः।
येऽन्ये च पापा यदपाश्रयाश्रयाः
शुद्धयन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः।।
(श्रीमद्भागवत २/४/१८)

अर्थात् "किरात (जंगली जाति), हूण (म्लेच्छ), पुलिन्द (असभ्य जाति) पुक्कसा (चांडाल जाति), आभीर, कंका (मांसाहारी), यवन (मुसलमान), खस (नेपाल–गढ़वाल निवासी एक पिछड़ी जाति) आदि नीच जातियाँ तथा दूसरे पापी लोग जिनके शरणागत भक्तों की शरण ग्रहण करने से ही पवित्र हो जाते हैं, उन सर्वशक्तिमान श्रीभगवान् को बारम्बार प्रणाम है।"

प्रत्येक मनुष्य चाहे वह दुराचारी ही क्यों न हो, और तो और पशु–पक्षी, कीट–पतंगादि भी भक्ति करने में परम स्वतन्त्र हैं।

भक्ति में सदातनत्व भी है–अर्थात् प्रत्येक अवस्था में भक्ति की जा सकती है। श्रीप्रह्लाद जी ने गर्भावस्था में, श्रीध्रुव जी ने बाल्यावस्था में, राजा अम्बरीष ने यौवनावस्था में, राजा ययाति ने जरावस्था में, अजामिल ने मृत्युकाल में, चित्रकेतु ने मरणोपरांत स्वर्ग में रहकर भी भगवान् की भक्ति की थी। और तो और नरक में भी रहकर भक्ति की जा सकती है। श्रीहरि–भक्तिविलासग्रन्थ में कहा है–"जहाँ–जहाँ नरकवासियों ने श्रीहरिनाम संकीर्तन किया वहाँ–वहाँ वे हरिभक्ति को प्राप्त कर दिव्यधाम को चले गये।"

अतः भक्ति करने के लिये किसी भी बात का विचार नहीं है। देशकाल का स्थान–अस्थान का कुछ भी बंधन नहीं यहाँ तक कि अशुद्ध वस्त्रों से और झूठे मुँह का भी कोई विचार नहीं है।

उपरोक्त इन सभी प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि भगवत् प्राप्ति की निश्चितता के सब लक्षण ही भक्ति में विद्यमान हैं और इसलिए भक्तिमार्ग को ही इस संसार सागर से पार होने तथा भगवत् प्राप्ति का एकमात्र साधन माना गया है।

• • •

नित्य कर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते करदर्शनम्।।
प्रातःकाल यह मन्त्र पढ़कर अपने हाथों के दर्शन करना अति शुभ है।

• • •

समुद्र वसने देवी, पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।
इस मन्त्र को पढ़कर सवेरे धरती माता को प्रणाम करना हितकारी है।

• • •

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।
इस मन्त्र से भगवान् सूर्य का नमन करने से घर में धन की वृद्धि होती है।

• • •

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्म कर्म समाधिना।।
भोजन से पहले इस मन्त्र का पाठ हमारी बुद्धि और तेज को बढ़ाता है।

• • •

दीप ज्योतिः पर ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।
दीप जलाकर इस मन्त्र का पाठ हमारे पापों का नाश करता है।

• • •

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।।
रात्रि में सोने से पहले इस मन्त्र को पढ़ने से भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से सारे क्लेशों (दुःखों) का नाश होता है।

सर्व बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यामस्मद्वैरि विनाशनम्।।
हर प्रकार की बाधा नाश करने में यह मन्त्र बहुत प्रभावी है।

• • •

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः।।
सन्तान के इच्छुक दम्पत्ति इस मन्त्र का जप करें तो सन्तान की प्राप्ति होगी।

• • •

सरस्वति महाभागे, वरदे कामरूपिणी।
विश्वरूपि विशालाक्षी, देहि विद्या परमेश्वरी।।
विद्या प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का जाप लाभकारी है।

• • •

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।
इस मन्त्र के जाप से रोगों का नाश हो जाता है।

• • •

या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
इस मन्त्र के जाप से घर में सदैव शान्ति रहती है। कलह समाप्त होता है।

• • •

आपदामपहर्तारं, दातारं सर्व सम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
इस मन्त्र के पाठ से भगवान् श्रीराम आपत्तियों का नाश करते हैं और धन सम्पदा देते हैं।

• • •

धन्या ब्रज वसुन्धरा

● श्रीसौरभ गौड़, अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद्, वृन्दावन

श्री वृन्दावन

वनं वृन्दावन नाम पशव्य नवकाननम्
गोपगोपीनां सेव्य पुण्यादितृणवीरूपम्

व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण एवं उनकी शक्ति राधारानी ने ब्रज के विभिन्न स्थानों पर जो लीलाऐं की उन स्थानों का अवलोकन मानसिक चक्षुओं से हम करेंगे। पिछले अंक में ब्रज की महिमा हमने जानी। आइये इस अंक में हम जानें ब्रज के अति महत्वपूर्ण पड़ाव श्री वृन्दावन धाम को, जहाँ पर कि भक्ति भी चिर यौवना व चिर नवीना हो गई और उसकी भागीरथी में अवगाहन करने वाले जाने कितने जीवों को शान्ति मिली। यही वो स्थान है जहाँ प्रभु की प्राप्ति के लिये न किसी कठिन तप की जरूरत है न योग की, न वैराग्य की, न व्रत की, न उपासना की। जरूरत है तो बस भक्ति की भागीरथी में डूबने की। 'जहाँ डाल-डाल और पात-पात पै राधे-राधे होय'- और यह नाम ही आपके कानों में जाकर स्वयं आपको रोमांचित कर देता है। जहाँ जाकर स्वयं आप कुछ विशेष अनुभव करने लगें वही वृन्दावन है।

सूरदास जी तो कहते हैं

'ब्रह्मादि सनकादि महामुनि कलपत दोउ कर जोर, वृन्दावन के तृण न भए हम लागत चरन के छोर' जहाँ तृण जैसा तुच्छ जीवन भी धन्य हो उठे ऐसी पावन भूमि है वृन्दावन। तभी तो रसखान कल्पना कर उठे कि यदि पुर्नजन्म हो तो चाहे मैं निर्जीव पत्थर, वृक्ष अथवा पशु-पक्षी ही क्यों न बनूँ पर वास वृन्दावन में ही मिले। यद्यपि 5000 वर्ष पूर्व के श्रीकृष्ण की लीलाओं के साक्षी वृन्दावन की भौगोलिक स्थिति परिस्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है फिर भी आज भी वही भाव मन में हिलोरें लेते हैं पूरे शरीर को रोमांचित कर जाते हैं तभी तो करोड़ों भक्त सहज ही खिंचे चले आते हैं। तो आइये आज साक्षात्कार करें कुछ प्रमुख स्थलों और देवालयों से-

मन्दिर श्रीबाँकेबिहारी जी

श्रीवृन्दावन आने का जिसे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, अथवा जिसने श्रीवृन्दावन का नाम भी सुना है, ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसने श्रीबाँकेबिहारी जी के दर्शन कर अपने को कृतार्थ न किया होगा अथवा उनके विशाल मन्दिर का दर्शन न किया होगा ?

इसका निर्माण लगभग संवत् 1921 में किया गया। कहा जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण स्वामी श्रीहरिदास जी के वंशजों के सामूहिक प्रयास से हुआ। आरम्भ में किसी धनी-दानी व्यक्ति का धन इसमें नहीं लगाया गया।

श्रीस्वामी जी बालकपन से संसार के प्रति अनासक्त थे, अनुरक्त थे एकमात्र श्रीश्यामाश्याम के मधुर गुणगान में। किशोर अवस्था में श्रीआशुधीर जी से युगलमन्त्र की

दीक्षा-शिक्षा लेकर यमुना के पुलिनवर्ती निकुंज में एकान्त स्थान पर प्रायः जाकर युगल-ध्यान में निमग्न रहने लगे। 25 वर्ष की आयु में श्रीआशुधीरजी से विरक्तवेश ले लिया।

आप जिस निकुंज में लताओं के नीचे युगल ध्यानस्थ होकर श्रीनिकुंजविहारी की नित्य लीलाओं का चिन्तन करते थे, वहाँ से स्वप्नादेशानुसार श्रीस्वामी जी की आज्ञा पाकर श्रीबीठल बिपुल आदि शिष्यों ने एक श्रीप्रिया-प्रीतम का अति मनोहर इन्द्रनीलमणिमय श्रीविग्रह भूमि से बाहर निकाला, जिसके दर्शन करते ही समस्तजन आनन्द चकित हो उठे। वही श्रीविग्रह श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज नाम से आज विश्व को अपनी रूप-माधुरी से मुग्ध करते हुए विराजमान हैं। उस प्राकट्य-स्थान को 'निधिवन' नाम से पुकारा जाता है। वह प्राकट्य दिन था मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी का, जिसे अब 'विहार-पंचमी' के महोत्सव-दिवस रूप में मनाया जाता है। चैत्र मास एकादशी से श्रावण मास की हरियाली अमावस तक प्रतिदिन ठाकुर श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज फूल बँगले में विराजते हैं जिसकी मनोरम छटा से दर्शनार्थियों को अद्वितीय और अद्‌भुत आनन्द प्राप्त होता है। हरियाली तीज के दिन ठाकुर स्वर्ण हिंडोले में विराजते हैं। जिसके दर्शन हेतु देश-विदेश से लाखों लोग उमड़ पड़ते हैं।

निधिवन

वास्तव में इस स्थान का नाम "निधुवन" है। निधुवन का अर्थ है रहः केलि। इस पावन स्थल पर श्रीश्रीराधामाधव की केलि-क्रीड़ा नित्य सम्पन्न होती है। केलि-क्रीड़ा के पश्चात् श्रीश्रीराधामाधव इस स्थान पर रात्रि में शयन करते हैं, ऐसी मान्यता है। वह विशाल भूमिखण्ड प्राचीन लताओं से आवृत्त है। मध्य में विशाखा कुण्ड है। इसे स्वामी श्रीहरिदास जी ने अपनी साधना-स्थली बनाया। यहाँ से श्रीबाँकेबिहारी जी का प्राकट्य हुआ था। इसमें एक रमणीय छोटे से मन्दिर का निर्माण किया गया है, जिसे "रंगमहल" कहा जाता है। इसमें श्रीप्रिया प्रियतम की शय्या के दर्शन हैं। इस पावन स्थल में श्री स्वामी श्रीहरिदास जी की, वीठल जी तथा श्रीजगन्नाथ जी की समाधियाँ हैं। विहार-पंचमी पर विशेष महोत्सव यहाँ आयोजित किया जाता है।

श्रीराधावल्लभ जी का मन्दिर

श्रीराधावल्लभजी वृन्दावन के प्राचीन-प्रसिद्ध सेव्य स्वरूपों में से एक हैं। जो गोस्वामी श्री हित हरिवंश महाप्रभु द्वारा संसेवित हुए थे। "श्रीराधावल्लभ दर्शन दुर्लभ" यह उक्ति ही पर्याप्त है श्रीराधावल्लभजी की प्रेम तथा लाड़ से भरी सेवा की जानकारी के लिये। जिस प्रेम, भाव तथा कोमलता से इनकी सेवा-पूजा होती है, वह देखते ही बनती है। बाँकी छवि, मद विघूर्णित नेत्र, साकूत मुसकान, उन्मुक्त छविदर्शन सभी कुछ बरबस मन को अपहृत किये लेते हैं। 1590 में जब गोस्वामी श्री हितहरिवंशजी ने देवबन्द से आकर जनशून्य प्रायः वृन्दावन में प्रवेश किया तब एक लताभवन में अपने उपास्य को स्थापित कर अष्टयामी सेवा का प्रचार-प्रसार किया। श्रीराधावल्लभजी सर्वप्रथम जिस जगह बिराजे, वह स्थान आज

कोइलिया घाट 'मदनटेर' के नाम से जाना जाता है। पचास वर्ष तक श्रीराधावल्लभजी इसी मन्दिर में विराजते रहे। बाद में अब्दुल रहीम खानखाना के दीवान सुन्दरदास कायस्थ ने वि. सं. 1641 में लाल पत्थर का मन्दिर बनवाकर विराजमान कराया गया। 85-86 वर्षों तक इसी में इनकी सेवा-पूजा चलती रही। वि. सं. 1726-27 में जब औरंगजेब ने वृन्दावन के प्राचीन मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया तब इस मन्दिर की सर्वाधिक क्षति हुई। उसके बाद उन्हें कामवन ले जाया गया। इसके बाद लालपत्थर वाले मन्दिर के पास ही लल्लू भाई गुजराती द्वारा निर्मित नवीन मन्दिर में आप विराजमान हुए। तब से आज तक ये ठाकुर अपनी बाँकी छवि से सबको मोहित कर रहे हैं। सात आरती एवं पाँच भोग युक्त इनकी सेवा होती है। पूर्ण शुद्धता और सात्विकता से युक्त गोस्वामियों द्वारा ही ठाकुर का भोग बनाया जाता है। मन्दिर में ऋतु, उत्सवों का आयोजन और सुन्दर-मधुर समाज गायन की परिपाटी एकमात्र इसी मन्दिर की विशेषता है।

श्रीसेवाकुंज

गोस्वामी हित हरिवंशजी द्वारा प्रकट किये गये आठ लीलास्थलों में सेवाकुंज का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर रसिकेश्वर श्यामसुन्दर को अपनी प्रियतमा श्रीराधे की चरणसेवा का सौभाग्य मिला है। इस स्थल की प्राकट्य तिथि ठीक-ठीक तो ज्ञात नहीं किन्तु श्रीराधावल्लभजी के मन्दिर के कुछ समय पश्चात् ही इसका निर्माण हुआ था। गोस्वामी हित हरिवंशजी के समय से लेकर आज तक कोई भी यहाँ रात्रि को निवास नहीं करता। आज्ञा उल्लंघन करने वाले की मृत्यु तक हो जाती है। श्रीराधा-माधव यहाँ पर रात्रि में नित्य रास एवं विश्राम करते हैं ऐसी मान्यता है। इसकी सघन लता-पताओं की छटा देखते ही बनती है। समीप ही स्थित ललित सरोवर की सुन्दर फुलवारी से युक्त अपनी रमणीकता से यह कुंज सभी को आकर्षित करती है।

इस छोटे सुन्दर मन्दिर में श्रीजी की नाम सेवा तथा श्यामसुन्दर द्वारा श्रीराधा के चरण संवाहन करते हुए सुन्दर चित्रपट सेवा विराजमान है। राधावल्लभीय गोस्वामीगण अष्टयामी पद्धति के द्वारा यहाँ सेवाकार्य संपादित करते हैं।

मन्दिर श्रीनृसिंह भगवान्

श्रीराधावल्लभ घेरे के प्रवेश द्वार के साथ श्रीनृसिंह भगवान् का प्राचीन मन्दिर है। सुन्दर शृंगार पूजादि की व्यवस्था है। श्रीनृसिंह चतुर्दशी के दिन सन्ध्या समय हिरण्यकशिपु वध लीला का सुन्दर प्रदर्शन किया जाता है।

मन्दिर श्रीराधारमणजी

श्रीश्रीराधारमणजी का मन्दिर श्रीवृन्दावन के श्रीगौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध सुप्रतिष्ठित मन्दिरों में एक महत्त्वपूर्ण मन्दिर है। इस मन्दिर में गौड़ीय षड्गोस्वामि-अन्यतम श्रीपाद गोपालभट्ट गोस्वामि द्वारा सेवित श्रीराधारमण ठाकुर विराजमान हैं। श्रीराधारमणजी के वाम भाग में गोमती चक्र सेवित हैं।

श्रीशालग्राम के साथ गोमती चक्र की सेवा का विधान है।

श्री गोस्वामी एक बार गण्डकी नदी पर पधारे। जब स्नान कर रहे थे, तो वहाँ उनकी अंजुली में एक-एक करके बारह शालग्राम की छोटी-बड़ी शिलायें आ गयीं, उन्हें लेकर आप वृन्दावन में पधारे और यमुना तट स्थित केशीघाट के निकट एक कुटीर में भाव-विभोर होकर श्रीशालग्राम जी की सेवा करने लगे।

एक समय वृन्दावन-यात्रा में एक सेठ ने आकर समस्त श्रीविग्रहों के लिए अनेक प्रकार के बहुमूल्य वस्त्र-अलंकार आदि भेंट किये। श्रीगोपालभट्टजी को भी उसने सब वस्त्रालंकारादि भेंट किये। किन्तु श्रीशालग्राम जी को वे कैसे धारण कराये जाते। मन में विचार उठा कि यदि मेरे आराध्य भी अन्यान्य श्रीविग्रहों की भाँति होते तो मैं उन्हें इन वस्त्रालंकारों से विभूषित करता।

वह रात निकल गयी। प्रातःकाल यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा न रही कि श्रीशालग्राम एक त्रिभंगललित, द्विभुज मुरलीधर मधुरमूर्ति श्यामरूप में आसन पर विराजमान हैं। श्रीविग्रह की पीठ पर अब भी पूर्व शालग्राम का चिह्न विद्यमान है।

मन्दिर श्रीराधादामोदर

इस मन्दिर में श्रीराधादामोदर जी का श्रीविग्रह सेवित है। संवत् 1599 माघ शुक्ला दशमी तिथि को श्रीराधादामोदर जी की स्थापना हुई।

श्रीसनातन गोस्वामी नित्य श्रीगिरिराज की परिक्रमा करने जाते थे। वृद्धावस्था में उनकी असमर्थता देखकर श्रीभगवान् ने बालक रूप में आकर उन्हें एक डेढ़ हाथ लम्बी वट पत्राकार श्याम रंग की गिरिराज शिला दी। उस पर श्रीभगवान् का चरण चिह्न एवं गाय का खुर चिह्नित था। श्रीबालरूप भगवान् ने कहा-सनातन अब तुम बहुत वृद्ध हो गये हो। इस गोवर्धन शिला की परिक्रमा करके अपना नियम पूरा कर लिया करो। वही श्रीगिरिराज शिला आज तक पूजित हैं। वर्तमान काल में श्रीवृन्दावनचन्द्र तथा अन्य दो युगल श्रीविग्रह भी यहाँ सेवित हैं। कार्तिक मास में नियमसेवा के दिनों में हजारों नर-नारी श्रीराधादामोदर तथा श्रीगिरिराज शिला की चार-परिक्रमा करके अति आनन्द लाभ करते हैं।

मन्दिर श्रीश्रीराधाश्यामसुन्दर

श्रीश्यामसुन्दर का श्रीविग्रह श्रीवृन्दाजी ने श्रीश्यामानन्द प्रभु को दिया था। इन्हें श्रीराधाजी का नूपुर सेवाकुंज में मिला था और श्रीजी ने दर्शन देकर इनसे लिया। श्रीपाद जीव गोस्वामी जी ने इन्हें 'श्यामानन्द' नाम दिया था क्योंकि ये श्रीश्यामसुन्दर-सेवा आराधना में निशिदिन आनन्द-विभोर रहते थे। श्रीश्यामानन्दप्रभु सेवित-श्रीविग्रह मन्दिर में अब षोड़शोपचार से पूजित हैं।

❑ क्रमशः

वास्तु शास्त्र परिचय

● श्रीविष्णु पाठक, ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

वास्तुशास्त्र और पंचमहाभूत

मिट्टी (मृत्तिका), जल, अग्नि, आकाश और वायु यही हैं हमारे शरीर और समस्त संसार की निर्मात्री एवं नियामक नैसर्गिक शक्तियाँ। हमारा यह शरीर और जो कुछ भी हम अपने चारों तरफ देखते हैं वह सब कुछ इन्हीं पंचतत्वों से निर्मित है। ये शक्तियाँ प्रकृति का ही मात्र निर्माण नहीं करती वरन् सतत् क्रियाशील भी रहती हैं और आसपास जो कुछ भी होता है, उसे प्रभावित करती हैं।

इन शक्तियों की अपनी मर्यादाएँ हैं अपनी–अपनी सुनिश्चित, सुनिर्धारित दिशाएं और कोण। पंचतत्वों में से प्रत्येक का अपना एक स्थान है। उस स्थान की मर्यादा में रहकर वह संतुलन और सामंजस्य की स्थिति का निर्माण कर सकता है। उस स्थान से भ्रष्ट होते ही वह मर्यादाच्युत भी हो जाता है और विशृंखलता उत्पन्न होती है तब वह विध्वंसकारी हो उठता है।

एक उदाहरण से इसे समझने का प्रयास करें। हमारे शरीर में वात, पित्त और कफ परिमाण की मार्यादा से बंधे हुए हैं। जब तक ये उचित परिमाण में रहते हैं तब तक शरीर स्वस्थ रहता है। निश्चित परिमाण से कम या अधिक होते ही ये शरीर को रोगी बना डालते हैं।

पंचतत्व मुख्यतः स्थान की मर्यादा में आबद्ध हैं। स्थानभ्रष्ट होते ही मर्यादाच्युत हो जाते हैं। जैसे निसर्ग (प्रकृति) से अग्नि का स्थान दक्षिण–पूर्व है व वायु का उत्तर–पश्चिम। ये स्थान नैसर्गिक रूप से निर्धारित हैं। यदि अग्नि को वायु के स्थान (उत्तर–पश्चिम) में स्थापित कर दिया जाय और वायु को अग्नि के स्थान (दक्षिण–पूर्व) में तो यह प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन होगा। इससे विशृंखलता उत्पन्न होगी। दोनों तत्वों की मर्यादाएं टूटेंगी और तब ये आस पास की प्रत्येक वस्तु पर विपरीत प्रभाव डालेंगे।

तत्वदर्शियों ने यह सत्य जान लिया था कि प्रत्येक तत्व का स्थान सुनिर्धारित है। अग्नि तत्व का स्थान दक्षिण–पूर्व कोण में ही रहना चाहिये। आप मनचाही जगह पर अग्नि का स्थान (रसोई) नहीं बना सकते। बनायेंगे तो अग्नितत्व के अनुकूल प्रभावों से वंचित रह जायेंगे। यही बात अन्य तत्वों पर भी लागू होती है।

पंचतत्वों में हमारे जीवन को बनाने या बिगाड़ने की अमोघ शक्ति है। यह हम पर निर्भर है कि हम उनकी इस शक्ति का सदुपयोग करते हैं या दुरुपयोग। वो हमारे भाग्य तक का आश्चर्यजनक रूप से आमूलचूल परिवर्तन कर सकते हैं। भाग्य का, सौभाग्य या दुर्भाग्य बन जाना, इस पर निर्भर है कि हमारे मकान, कार्यालय या कारखाने में वे अपने निसर्गतः स्थानों पर रखे गये हैं या नहीं।

परन्तु अंततः तो हम स्वयं ही अपने भाग्यविधाता हैं, क्योंकि पंचतत्वों को उनके निर्धारित स्थानों पर रखना हम पर निर्भर है। वे स्वयं तो चलकर किसी स्थान पर नहीं जा सकते। वे वही रहेंगे, जहां हम उन्हें रखेंगे। उन्हें सही स्थान पर रखना वास्तुशास्त्र का काम है और वास्तुशास्त्र की सेवाएं लेना हमारा।

हम जान चुके हैं कि यह सम्पूर्ण विश्व पंचतत्वों से निर्मित है। पंचतत्व इस विश्व के केवल निर्माता ही नहीं हैं, मर्यादित रहें तो इसके पालक भी हैं और अमर्यादित होने पर संहारक भी। मर्यादित ये तभी रहेंगे जब ये सही स्थानों में प्रतिष्ठित किये जाएँ, इसलिए वास्तुशास्त्र में दिशाएं और कोणों का ज्ञान होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सामान्यतः हम दिशाओं का अनुमान सूर्य के उदय और अस्त होने के आधार पर करते हैं। हमारे लिये सूर्योदय की दिशा पूर्व है और सूर्यास्त की पश्चिम। पूर्वाभिमुख हो जाने पर बायें हाथ की तरफ उत्तर और दाहिने हाथ की तरफ दक्षिण दिशा होती है।

परन्तु वास्तुशास्त्र के दिशाज्ञान का आधार सूर्योदय ओर सूर्यास्त का स्थान नहीं होता। वह जानता है कि पूर्व दिशा का एक निश्चित स्थान है, परन्तु सूर्योदय का स्थान निश्चित नहीं।

वास्तु (प्रकृति)

विश्व पांच मूल और सारभूत तत्वों से निर्मित हुआ है, जिन्हें पंचमहाभूत कहते हैं, ये हैं :

(१) आकाश (अंतरिक्ष), (२) वायु, (३) अग्नि, (४) जल, (५) पृथ्वी या भूमि। पृथ्वी के सभी प्राणी और हमारे द्वारा निर्माण किये जाने वाले भवन (इमारतें) भी इन्हीं तत्वों से बने हैं। इन शक्तियों की परस्पर निर्भरता और आंतरिक प्रक्रिया, जो एक–दूसरे से विरोधी और अपकर्षक प्रकृति रखती है तथा उनके मध्य एक अदृश्य समीकरण का कार्य करती है, मानव बुद्धि की समझ से परे है। मनुष्य अपने कार्य करने तथा रहने के स्थानों को अपनी इच्छानुसार निर्मित कर सकता है परन्तु वह कभी भी प्रकृति और उसकी शक्तियों को, जो उसके जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती हैं, नियंत्रित करने के योग्य नहीं हो सकेगा।

१. आकाश (अंतरिक्ष) : यह पृथ्वी से दूर एक अनंत क्षेत्र है, जिसमें केवल हमारा सौरमंडल ही नहीं, वरन् पूरी आकाश गंगा स्थित है। इसकी प्रभावोत्पादक शक्तियाँ हैं प्रकाश, ताप, गुरुत्वाकर्षण शक्ति और लहरें, चुंबकीय क्षेत्र तथा अन्य। इसकी मुख्य विशेषता शब्द (ध्वनि) है।

२. वायु : पृथ्वी को लगभग ४०० किमी. तक उसका वायुमंडल घेरे हुए है। इसमें २१ प्रतिशत ऑक्सीजन (प्राणवायु), ७८ प्रतिशत नाइट्रोजन, कार्बनडाइऑक्साइड, हीलियम, दूसरी प्रकार की गैसें, धूल के कण, नमी और कुछ अंशों में वाष्प है। मनुष्यों, पशुओं व पौधों का जीवन तथा अग्नि तक इन पर निर्भर करती है। इसकी मुख्य विशेषता है शब्द और स्पर्श।

३. अग्नि : यह प्रकाश और अग्नि के ताप (ज्वलन), विद्युत, ज्वालामुखी का ताप, बुखार या ज्वलनशीलता की गर्मी, ऊर्जा, दिन तथा रात, ऋतुएँ और सौरमंडल के इसी प्रकार के अन्य पहलुओं, उत्साह, परिश्रम तथा भावनात्मक शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं – शब्द, स्पर्श और रूप (आकार)।

४. जल : वर्षा, नदियाँ और सागर इसका प्रतिनिधित्व करते हैं। यह तरल, ठोस (वर्फ) और गैस (भाप, बादल) रूप में होता है। यह दो और एक के अनुपात में हाइड्रोजन और आक्सीजन का सम्मिश्रण है। प्रतिक्रिया में यह पूर्णतया निष्क्रिय है। पृथ्वी के प्रत्येक प्रकार के जीव तथा पौधे में पानी एक निश्चित मात्रा में स्थित होता है और इसकी मुख्य विशेषताएँ शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस (स्वाद) हैं।

५. भूमि (पृथ्वी) : सूर्य के क्रम में तीसरा ग्रह है। यह एक विशाल चुंबक है, जिसके आकर्षण के केन्द्र उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव हैं। इसका चुम्बकीय क्षेत्र और गुरुत्वाकर्षण शक्ति प्रत्येक जीवित और निर्जीव वस्तु पर अत्यधिक प्रभाव रखती है। यह अपनी धुरी पर २३.५ प्रतिशत झुकी हुई है, जिसके कारण ही उत्तरायण और दक्षिणायण होते हैं। यह अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, जिससे पृथ्वी पर रात और दिन होते हैं। सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगाने में यह ३६५ दिन (एक वर्ष) का समय लेती है। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल और एक चौथाई भाग स्थल है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध हैं।

इन पाँच तत्वों और व्यक्ति तथा उसके निवास व कार्य करने के मध्य बाहरी, आंतरिक और सतत् संबंध रहता है। इन पंच शक्तियों की प्रभावक्षमता को समझकर मनुष्य अपने मकानों का उचित परिरूप (डिजायन) बनाकर अपनी दशा में सुधार कर सकता है। भवनों को जिस स्थान पर बनाया जाता है, उनकी जो दिशा और व्यवस्था होती है उसका उनमें रहने वालों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है तथा प्राचीनग्रंथ वास्तुशिल्प शास्त्र पीढ़ियों–दर–पीढ़ियों द्वारा अनुभव किये गये इसी ज्ञान के सारतत्त्व से पूर्ण है।

समरांगण सूत्रधार में लेखक वास्तुशिल्पशास्त्र के विषय पर प्रकाश डालने की आवश्यकता की व्याख्या निम्न प्रकार से प्रस्तुत करता है :

सुखं धनानि बुद्धिश्च संततिः सर्वदा नृणाम्।
प्रियान्येषां च संसिद्धिः सर्वं स्यात् शुभ लक्षणम्।।
यात्रा निन्दित लक्ष्मात्र ताधीतेषां विघात कृत्।
अथ सर्वमुपादेयं यद्भवेत् शुभलक्षणम्।।
देशः पुरनिवासश्च सभावीस्मसनानि च।
यद्यदीदृशमन्याश्च तथा श्रेयस्करं मतम्।।
वास्तुशास्त्रादृतेतस्य न स्याल्लक्षणनिर्णयः।
तस्मात् लोकस्य कृपया शास्त्रमेतद्धरीयते।।

अर्थ : सही रूप से निर्मित सुखद मकान में अच्छे स्वास्थ्य, धन–संपत्ति तथा शांति का निवास होगा और यह (उसके स्वामी को) कृतज्ञता के ऋण से मुक्त करेगा। वास्तुशास्त्र के नियमों की अपेक्षा का परिणाम अनावश्यक यात्राओं, अपयश, प्रसिद्धि की हानि, दुःख और निराशा के रूप में प्राप्त होगा। निर्धारित नियमों की उपेक्षा करके बनाये गये (मकान) भवन के लक्षणों के बारे में नहीं बताया जा सकता। सभी घरों, ग्रामों, कस्बों और नगरों को वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्मित करना चाहिये। इसीलिए वास्तुशिल्पशास्त्र को विश्व के सर्वतोमुखी कल्याण, संतोष और उसे अधिक सुंदर बनाने के लिए प्रकाश में लाया गया है।

विश्वकर्मा – वास्तुशास्त्र इसकी व्याख्या निम्नलिखित रूप से करता है :

शास्त्रेनानेन सर्वस्य लोकस्य परमं सुखम्।
चतुर्वर्ग फलप्राप्तिः सुलोकश्च भवेद्ध्रुवम्।।
शिल्पशास्त्रपरिजाना मृत्योऽपि सुजेतांव्रजेत्।
परमानंदजनकं देवानामिदमीरितम्।।
शिल्पं बिना नहि जगतिषु लोकेषु विद्यते।
जगद्विना न शिल्पांच वर्तते वासवप्रभो।

अर्थ : वास्तुशास्त्र के कारण जीव अच्छे स्वास्थ्य, सुख और सर्वतोमुखी संपन्नता को प्राप्त करता है। इस शास्त्र द्वारा मानव दिव्यता उपलब्ध करता है। शिल्पशास्त्र का ज्ञान और इस संसार की विद्यमानता परस्पर संबंधित हैं। वास्तुशास्त्र के अनुयायी केवल सांसारिक सुख ही नहीं बल्कि दिव्य आनंद का भी अनुभव करते हैं।

वास्तु एक दृष्टि में

साधारणतः वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :

1) पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हों।
2) पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
3) प्रमुख द्वार दक्षिण–पश्चिम (S/W) में न हो।
4) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पूर्व (S/E) तथा पूर्वोत्तर में (N/E) न हो।
5) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6) रसोई घर अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7) देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हो।
8) सीढ़ियाँ घड़ी नुमा (Clock wise) हो।
9) सारे प्रमुख द्वार (Clock wise) खुले।
10) घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11) शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12) जल स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13) ओवर हेड टंकी दक्षिण–पश्चिम (S/W) में हो।
14) बहुमूल्य वस्तुएँ घर में दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15) सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल :

1) पूर्वाभिमुख तथा उत्तराभिमुख अर्थात् North Facing & East Facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2) प्रधान (Head) का बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3) प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4) नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखें।
5) Beam के नीचे न बैठें तथा यदि Beam हो तो Ceiling करा लें।
6) प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7) व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8) व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9) मुनीम एवं प्रबन्धक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैठें।
10) किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (यह देव स्थान है)।
11) पीने का पानी पूर्वोत्तर (N/E) में रखें एवं पैन्ट्री (Pantry) अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों में अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सलाह अत्यन्त आवश्यक है।

संकट नाश के लिए

संकटनाशनस्तोत्रम्

• नारद उवाच •

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्। भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्। तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च। सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्। एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः। न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।।
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्। संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्। तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।

।। इति श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

नारद जी कहते हैं–पहले मस्तक झुकाकर गौरीपुत्र विनायकदेव को प्रणाम करके प्रतिदिन आयु, अभीष्टमनोरथ और धन आदि प्रयोजनों की सिद्धि के लिए भक्तगण गणेशजी का स्मरण करें; पहला नाम 'वक्रतुण्ड' है, दूसरा 'एकदन्त' है, तीसरा ' कृष्ण–पिङ्गाक्ष' है, चौथा 'गजवक्त्र' है, पाँचवाँ 'लम्बोदर', छठा 'विकट', सातवाँ 'विघ्नराजेन्द्र', आठवाँ 'धूम्रवर्ण', नवाँ 'भालचन्द्र', दशवाँ 'विनायक', ग्यारहवाँ 'गणपति', और बारहवाँ नाम –'गजानन' है। जो मनुष्य सवेरे, दोपहर और सायं–तीनों संध्याओं के समय प्रतिदिन इन बारह नामों का पाठ करता है, उसे विघ्न का भय नहीं होता। यह नाम–स्मरण उसके लिए सभी सिद्धियों का उत्तम साधक है। इन नामों के जप से विद्यार्थी विद्या, धनार्थी धन, पुत्रार्थी अनेक पुत्र और मोक्षार्थी मोक्ष पाता है। इस गणपतिस्तोत्र का नित्य जप करें। जपकर्ता को छः महीने में अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। एक वर्ष तक जप करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं है।

जो इस स्तोत्र को लिखकर आठ ब्राह्मणों को अर्पित करता है, उसे गणेशजी की कृपा से सम्पूर्ण विद्या की प्राप्ति होती है।

।। इस प्रकार श्रीनारदपुराण में 'संकटनाशन'–नामक गणेशस्तोत्र पूरा हुआ ।।

चौघड़िया मुहूर्त

दिन का चौघड़िया देखने के लिए दिनमान अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय एवं रात का देखने के लिए रात्रिमान अर्थात् सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को 8 से भाग दें। भागफल जो आए वह एक चौघड़िया का समय होगा। चौघड़िया लाभ, अमृत एवं शुभ श्रेष्ठ फलदायक है। चर का चौघड़िया यात्रा एवं व्यापारिक कार्य के लिए शुभ है। उद्वेग, रोग एवं काल अशुभ फलदायक है।

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहला चौघड़िया	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
दूसरा चौघड़िया	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरा चौघड़िया	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथा चौघड़िया	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पाँचवां चौघड़िया	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवां चौघड़िया	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवां चौघड़िया	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
आठवां चौघड़िया	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहला चौघड़िया	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरा चौघड़िया	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरा चौघड़िया	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथा चौघड़िया	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पांचवां चौघड़िया	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवां चौघड़िया	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवां चौघड़िया	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवां चौघड़िया	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

राहु काल चक्र

वार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
समय	प्रातः 7.30से 9.00 तक	सायं 3.00से 4.30 तक	दिन में 12.00से 1.30 तक	दिन में 1.30से 3.00 तक	दिन में 10.30से 12.00 तक	दिन में 9.00से 10.00तक	सायं 4.30से 6.00 तक

● श्रीमदन गोपाल शर्मा

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहुँ हित होई।।

जीवन हम सभी जीते हैं। मगर जीवन जीन की संतुष्टि अथवा आनन्द हम सभी समान रूप से अनुभव नहीं कर पाते। कहीं सामर्थ्य का अभाव तो कहीं साधनों का अभाव हमें निरन्तर अपने सहज स्वरूप का अनुभव करने से या कहें कि जीवन में पूर्णता की ओर अग्रसर होने से वंचित करता रहता है और असंतोष, बेचैनी या अपनी सामर्थ्य पर अविश्वास हमें अपने कुहरे में ढँके रहता है। एक–एक क्षण से बनकर दिन, दिन–दिन करके महीने और महीनों से मिलकर साल भी गुजर जाता है और यह आपाधापी भरी जिन्दगी यह मूल्यांकन करने का अवसर नहीं देती कि गत वर्ष हमने कितना विकास किया कितनी सामर्थ्य पाई या खोई। वर्ष प्रति वर्ष जीवन का प्रवाह अपने आगोश में हमें समेटे गतिशील रहता है। इस असहायता की सटीक टिप्पणी कबीर के वाक्य–**''काल चिरैया चुग रही निस दिन आयु खेत''** में झलक ही जाती है।

मगर इस सतत प्रवहमान, स्थायी रूप से परिवर्तनशील संसार में हममें से प्रत्येक अपने व्यक्तित्व के प्रभाव समाज और परिवार पर अंकित करता है। गोस्वामी तुलसीदास ने इन्हें तीन बड़ी श्रेणियों में वर्गीकृत कर दिया है। अपने–अपने जीवन में हम अपनी योग्यता और पराक्रम से संपत्ति अर्जित करते हैं। पिछले कुछ दिनों में हमारी प्राथमिकताओं में संपत्ति एकत्र करना सर्वोपरि स्थान पर विराजित हो चुका है। यद्यपि संपत्ति की प्रचुरता अगले उच्चतर उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त साधन ही है। इस संपत्ति संबन्धी प्रभाव को गोस्वामी जी ने 'भूति' वर्ग में रखा है।

अपनी अर्जित संपत्ति और योग्यता का उपयोग कर हममें से कुछ लोग समाज के नायक –राजनेता–अभिनेता–साहित्य प्रणेता–कलाकार इत्यादि के रूप में अपने विचारों और शब्दों के माध्यम से अपने आस–पास के समाज और परिवेश को प्रभावित करते हैं। इस प्रभाव को तुलसी ने 'भनिति' या अभिव्यक्ति वर्ग में रखा है।

'भूति' और 'भनिति' दोनों ही हमारे स्वयं के द्वारा अर्जित और प्रसारित प्रभाव है जो हमारे जीवन की सार्थकता को हमारी अपनी दृष्टि से परिभाषित और प्रतिपादित करते हैं। इनके संयुक्त प्रभाव को जिस तरह हमारा परिवेश और समाज के अन्य व्यक्ति ग्रहण करते हैं और हमारी उपस्थिति का सत्यापन करते हैं वह अन्य लोगों की हमारे बारे में जो धारणा बनती है उसके

माध्यम से अभिव्यक्त होती है। जिसे सहज शब्दों में किसी व्यक्ति की 'प्रसिद्धि' फेम अथवा 'कीरति' (कीर्ति) कहा जा सकता है।

अब यह कैसे जाना जाये कि हम जो समय खर्च करते हैं, चाहे वो पल–पल करके अथवा दिन–दिन करके खर्च होता हो या वर्षों और दशकों में खर्च होता हो, उसके बदले में हमारी भूति, भनिति और कीरति अभिवर्धित हुई वह कितनी अच्छी है ? तो बड़ा ही सरल सा मापदण्ड गोस्वामी तुलसीदास ने सुझा दिया कि हमारी संपत्ति, हमारी वाणी और हमारी प्रसिद्धि (केवल) उतनी ही अच्छी है जितनी इस (समाज) संसार के सभी लोगों के हित में उपयोग की जा सकती है। 'सुर सरि सम' और 'सब कहुँ' यहाँ किसी व्यक्ति विशेष, वर्ग विशेष की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी गई है। गंगा मानव मात्र के कल्याण का साधन है, सूर्य का प्रकाश जीवमात्र के जीवन का आधार है इसी प्रकार कोई समृद्धि, वचन और प्रसिद्धि जीवमात्र के लिए उपयोगी हो तो वही सफल है, वही जीवन के आनन्द की अनुभूति में सहायक है।

आइये, हम अपनी अर्जन क्षमताओं को अपनी पूर्णता प्राप्त करने के साधन रूप में प्रयोग करें। यह पत्रिका समाज में जीवनोपयोगी महत्वपूर्ण ज्ञान सरल शब्दों में प्रस्तुत करती है। इस पुस्तिका की कीर्ति उत्तरोत्तर बढ़ेगी, यह इसकी उपयोगिता का ज्वलन्त प्रमाण होगा। इस समाजोपयोगी अनुष्ठान से जुड़े सभी व्यक्ति एवं संस्थायें चरम साधुवाद के पात्र हैं।

जय श्री राधे।

भजन

फूलों में सज रहे हैं श्री वृन्दावन बिहारी
और संग में सज रही हैं वृषभान की दुलारी
शृंगार तेरा प्यारे शोभा कहूँ क्या उसकी
उसपे गुलाबी पटुका उसपे गुलाबी साड़ी,
उज्ज्वल किरण सी राधा, नीलम से सोहे मोहन
उसपे विराजे आकर राधारमण बिहारी
टेढ़ी सी तेरी चितवन हर एक अदा है प्यारी
बाँके के बाँके नैना मारे जिगर कटारी
बेदाम बिक चुके हैं जबसे छबी निहारी

व्रत-पर्व

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/19 • सूर्यास्त 06/41 • ग्रीष्म ऋतु (ता0 25 मई से 07 जून 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
25/05★	सोमवार	प्रतिपदा	रोहिणी	चन्द्र मिथुन राशि पर रात्रि शेष 05/07 से, करवीर 01 व्रत,
		03.55	05.52 सायं	दशाश्वमेध स्नान प्रारंभ.
26/05	मंगलवार	द्वितीया	मृगशिरा	**********
		01.37	04.20	
27/05	बुधवार	तृतीया	आर्द्रा	भद्रा रात्रि 09/58 से, रम्भा 03 व्रत, महाराणा प्रताप जयंती, **वैनायकी**
		11.12	02.43	**श्री गणेश चतुर्थी 04 व्रत ★**
28/05★	गुरुवार	चतुर्थी	पुनर्वसु	भद्रा दिन में 08/42 तक, चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 07/27 से,
		08.42	01.01	**उमावतार 04 व्रत, गुरु-पुष्य योग दिन में 01/01 से ★**
29/05	शुक्रवार	पंचमी	पुष्य	श्लेषा के मूल आरम्भ दिन में 11/25 से, षष्ठी समाप्त रात्रि
		06.16 प्रातः	11.25	03.56 पर ★
30/05	शनिवार	सप्तमी	श्लेषा	मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर दिन में 09/56 से, भद्रा रात्रि
		(01.48)	09.56	01.48 से ★
31/05	रविवार	अष्टमी	मघा	मूल समाप्त दिन में 08.38 पर, भद्रा दिन में 12/50 तक शुक्ला
		11.54	08.38	देवी पूजन ★
01/06	सोमवार	नवमी	पू.फा.	चन्द्र कन्या राशि पर दिन में 01/30 से ★
		(10.21)	07.40	
02/06★	मंगलवार	दशमी	उ.फा.	**श्री गंगा दशहरा 10 व्रत,** श्री गंगा अवतरण, सेतुबन्ध रामेश्वरम
		(09.11)	07.01 प्रातः	प्रतिष्ठा दिवस, विशेषोत्सव गंगोत्री, हरिद्वार ★
03/06★	बुधवार	एकादशी	हस्त	भद्रा दिन में 08/50 से रात्रि 08/29 तक, चन्द्र तुला राशि पर सायं
		(08.29)	06.47 प्रातः	06/54 से, **निर्जला एकादशी 11 व्रत सबका, भीमसेनी**
				एकादशी ★
04/06★	गुरुवार	द्वादशी	चित्रा	**गौतमेश्वर दर्शन, कूर्म जयंती ★**
		(08.15)	07.02 प्रातः	
05/06	शुक्रवार	त्रयोदशी	स्वाती	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि 02/40 से, प्रदोष 13 व्रत, दक्षिणात्त्य
		(08.35)	07.47	वट् सावित्री व्रतारंभ ★
06/06	शनिवार	चतुर्दशी	विशाखा	भद्रा रात्रि 09/25 से, **दक्षिणात्त्य वट् सावित्री व्रत का द्वितीय**
		(09.25)	08.58	**दिन ★**
07/06★	रविवार	पूर्णिमा	अनुराधा	स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, **दक्षिणात्त्य वट् सावित्री व्रत का**
		(10.41)	10.44	**समापन,** भद्रा दिन में 10/03 तक, संत कबीर जयंती, ज्येष्ठ के
				मूलारंभ दिन में 10/44 पर ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 आषाढ़ कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/14 • सूर्यास्त 06/46 • ग्रीष्म ऋतु (ता0 08 जून से 22 जून 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
08/06	सोमवार	प्रतिपदा (12.21)	ज्येष्ठा 12.52	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर दिन में 12/15 से ★
09/06	मंगलवार	द्वितीया (02.16)	मूल 03.17	मूल समाप्त दिन में 03/17 पर ★
10/06	बुधवार	तृतीया (04.19)	पू.षा. 05.53 सायं	चन्द्र मकर राशि पर रात्रि 12/32 पर, भद्रा दिन में 03/18 से 04/19 तक ★
11/06	गुरुवार	चतुर्थी 60.00 समस्त	उ.षा. (08.30)	**संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी 04 व्रत,** चन्द्रोदय रात्रि 09/39 पर ★
12/06★	शुक्रवार	चतुर्थी 06.36 प्रातः	श्रवण (10.55)	★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★
13/06	शनिवार	पंचमी 08.00	धनिष्ठा (01.04)	चन्द्र कुम्भ राशि पर दिन में 12 बजे से, पंचक आरंभ दिन में 12 बजे से ★
14/06	रविवार	षष्ठी 09.24	शतभिषा (02.48)	भद्रा दिन में 09/24 से 09/52 रात्रि तक, पंचक ★
15/06	सोमवार	सप्तमी 10.20	पू.भा. (04.15)	चन्द्र मीन राशि पर रात्रि 09/46 से, पंचक ★
16/06	मंगलवार	अष्टमी 10.47	उ.भा. (04.51)	श्री शीतलाष्टमी 08 व्रत, सौर आषाढ़ मास आरंभ, पंचक, मूलारंभ रात्रि 04/51 से ★
17/06	बुधवार	नवमी 10.43	रेवती (05.07)	भद्रा रात्रि 10/26 से, चन्द्र मेष राशि पर रात्रि शेष 05/07 से, पंचक समाप्त रात्रि 05/07 पर, मूल चल रहे हैं ★
18/06	गुरुवार	दशमी 10.09	अश्विनी (04.55)	भद्रा दिन में 10/09 तक, मूल समाप्त रात्रि 04/55 पर ★
19/06	शुक्रवार	एकादशी 09.07	भरणी (04.17)	**योगिनी 11 एकादशी व्रत सबका ★**
20/06	शनिवार	द्वादशी 07.39 प्रातः	कृत्तिका (03.20)	चन्द्र वृष राशि पर दिन में 10/03 से, **शनि प्रदोष 12 व्रत ★**
21/06★	रविवार	त्रयोदशी 05.51 प्रातः	रोहिणी (02.04)	भद्रा प्रातः 05/51 से सायं 04/49 तक, **मास शिवरात्रि 13 व्रत,** चतुर्दशी समाप्त रात्रि 03/46 पर ★
22/06	सोमवार	अमावस्या (01.29)	मृगशिरा (12.35)	स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, **सोमवती अमावस्या,** चन्द्र मिथुन राशि पर दिन में 01/20 पर ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2066 आषाढ़ शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/13 • सूर्यास्त 06/47 • ग्रीष्म ऋतु (ता0 23 जून से 07 जुलाई 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
23/06	मंगलवार	प्रतिपदा (11.03)	आर्द्रा (10.58)	**********
24/06★	बुधवार	द्वितीया (08.33)	पुनर्वसु (09.18)	चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 03/43 पर, श्री राम-बलराम महोत्सव, **श्री रथयात्रा (विशेषोत्सव श्री जगन्नाथपुरी)** ★
25/06★	गुरुवार	तृतीया 06.07 सायं	पुष्य (07.39)	**गुरु-पुष्य योग रात्रि 07/39 पर,** भद्रा रात्रि 04/56 से, श्लेषा के मूलारंभ रात्रि 07/39 पर ★
26/06	शुक्रवार	चतुर्थी 03.46	श्लेषा 06.07 सायं	भद्रा दिन में 03/46 तक, चन्द्र सिंह राशि पर सायं 06/07 से, **वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी 04 व्रत,** मूल चल रहे हैं ★
27/06	शनिवार	पंचमी 01.35	मघा 04.47	मूल समाप्त सायं 04/47 पर ★
28/06	रविवार	षष्ठी 11.40	पू.फा. 03.43	चन्द्र कन्या राशि पर रात्रि 09/37, **श्री स्कन्दषष्ठी 06 व्रत** ★
29/06	सोमवार	सप्तमी 10.05	उ.फा. 03.00	भद्रा दिन में 10/05 से रात्रि 09/29 तक ★
30/06★	मंगलवार	अष्टमी 08.53	हस्त 02.40	चन्द्र तुला राशि पर रात्रि 02/44 से ★
01/07	बुधवार	नवमी 08.08	चित्रा 02.48	**********
02/07	गुरुवार	दशमी 07.53	स्वाती 03.25	भद्रा रात्रि 08/00 से, सोपपदा 10, **गिरिजा पूजा** ★
03/07★	शुक्रवार	एकादशी 08.09	विशाखा 04.34	भद्रा दिन में 08/09 तक, चन्द्र वृश्चिक राशि पर दिन में 10/18 से, **श्री विष्णु शयनी 11 एकादशी व्रत सबका** ★
		हरि शयन हो गया है।		
04/07	शनिवार	द्वादशी 08.57	अनुराधा 06.10सायं	ज्येष्ठा के मूलारंभ सायं 06/10 से, **शनि प्रदोष 12 व्रत,** चातुर्मास व्रत आरंभ ★
05/07	रविवार	त्रयोदशी 10.10	ज्येष्ठा (08.13)	चन्द्र धनु राशि पर रात्रि 08/13 से, मूल चल रहे हैं ★
06/07	सोमवार	चतुर्दशी 11.48	मूल (10.34)	मूल समाप्त रात्रि 10/34 पर, भद्रा दिन में 11/48 से रात्रि 12/44 तक, व्रत की पूर्णिमा ★
07/07	मंगलवार	पूर्णिमा 01.41	पू.षा. (01.09)	स्नान-दान की पूर्णिमा, **गुरु पूर्णिमा,** गुरु पूजन, श्री कोकिला 15 व्रत, **श्रावण मास के नियम आरम्भ** ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 श्रावण कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/15 • सूर्यास्त 06/45 • ग्रीष्म ऋतु (ता0 08 जुलाई से 22 जुलाई 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
08/07	बुधवार	प्रतिपदा	उ.षा.	चन्द्र मकर राशि पर दिन में 07/49 पर, **नित्य नैमित्तिक पार्थिव शिव अर्चना आरंभ,** अशून्य शयन 02 व्रत, चन्द्रोदय 07/39 पर
09/07	गुरुवार	03.43 द्वितीया	(03.47) श्रवण	
10/07	शुक्रवार	05.41 सायं तृतीया	60.00 समस्त श्रवण	**संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी 4 व्रत,** चन्द्रोदय रात्रि 08/47 पर, भद्रा प्रातः 06/34 से रात्रि 07/26 तक, चन्द्र कुम्भ राशि पर रात्रि 07/23 से, पंचकारंभ रात्रि 07/23 से ★
11/07	शनिवार	(07.26) चतुर्थी	06.16 प्रातः धनिष्ठा	पंचक ★
12/07	रविवार	(08.52) पंचमी	08.30 शतभिषा	पंचक ★
13/07★	सोमवार	(09.50) षष्ठी	10.20 पू.भा.	भद्रा रात्रि 10/19 से, चन्द्र मीन शनि पर प्रातः 05/23 से, **श्रावण सोमवार व्रत,** पंचक ★
14/07★	मंगलवार	(10.19) सप्तमी	11.44 उ.भा.	पंचक, भद्रा दिन में 10/18 तक, **भौम व्रत, दुर्गा यात्रा, गौरी पूजा, हनुमत् दर्शन** ★
15/07	बुधवार	(10.16) अष्टमी	12.36 रेवती	पंचक समाप्त दिन में 12/59 पर, चन्द्र मेष राशि पर दिन में 12/59 पर **बुधाष्टमी 08 व्रत,** मूल चल रहे हैं ★
16/07	गुरुवार	(09.45) नवमी	12.59 अश्विनी	मूल समाप्त दिन में 12/53 पर ★
17/07	शुक्रवार	(08.45) दशमी	12.53 भरणी	भद्रा दिन में 08/01 से रात्रि 07/18 तक, चन्द्र वृष राशि पर सायं 06/07 से, सौर श्रावण मासारंभ ★
18/07	शनिवार	(07.18) एकादशी	12.20 कृत्तिका	**कामदा 11 एकादशी व्रत सबका** ★
19/07	रविवार	05.33 सायं द्वादशी	11.29 रोहिणी	चन्द्र मिथुन राशि पर रात्रि 09/33 पर, प्रदोष 12 व्रत ★
20/07★	सोमवार	03.28 त्रयोदशी	10.16 मृगशिरा	भद्रा दिन में 01/12 से रात्रि 11/59 तक, **श्रावण सोमवार व्रत, मास शिवरात्रि 13 व्रत** ★
21/07★	मंगलवार	01.12 चतुर्दशी	08.51 आर्द्रा	चन्द्र कर्क राशि पर रात्रि 11/59 पर, श्राद्ध की अमावस्या, **भौम व्रत, दुर्गायात्रा, गौरी व्रत, हनुमत् दर्शन** ★
22/07	बुधवार	10.46 अमावस्या	07.15 पुनर्वसु	स्नान-दान की अमावस्या, पुष्य समाप्त रात्रि 03/55 पर, आज सूर्य ग्रहण है ★
		08.18	05.35 प्रातः	

आज सूर्य ग्रहण

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2066 श्रावण शुक्ल पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 05/20 • सूर्यास्त 06/40 • वर्षा ऋतु (ता0 23 जुलाई से 05 अगस्त 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
23/07	गुरुवार	प्रतिपदा	श्लेषा	मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर रात्रि 02/22 पर, द्वितीया
		05.50 प्रातः	(02.22)	समाप्त रात्रि 03/28 पर ★
24/07	शुक्रवार	तृतीया	मघा	मूल समाप्त रात्रि 12/58 पर, स्वर्ण गौरी 03 व्रत, **मधु श्रवा 03 व्रत (विशेष-मिथिला एवं गुजरात)** ★
		(01.16)	(12.58)	
25/07	शनिवार	चतुर्थी	पू.फा.	भद्रा दिन में 12/19 से रात्रि 11/21 तक, **वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी 04 व्रत** ★
		(11.21)	(11.51)	
26/07★	रविवार	पंचमी	उ.फा.	चन्द्र कन्या राशि पर प्रातः 05/39 से, **श्री नाग पंचमी 05 व्रत, तक्षक पूजा** ★
		(09.45)	(11.03)	
27/07★	सोमवार	षष्ठी	हस्त	**कल्कि अवतार, श्रावण सोमवार व्रत** ★
		(08.32)	(10.37)	
28/07★	मंगलवार	सप्तमी	चित्रा	भद्रा रात्रि 07/46 से, चन्द्र तुला राशि पर दिन में 10/38 से, भौम व्रत, **दुर्गा यात्रा, गौरी पूजन, हनुमत् दर्शन, गोस्वामी तुलसीदास जयंती** ★
		(07.46)	(10.38)	
29/07	बुधवार	अष्टमी	स्वाती	भद्रा दिन में 07/38 तक, **बुधाष्टमी 08 व्रत** ★
		(07.29)	(11.08)	
30/07	गुरुवार	नवमी	विशाखा	चन्द्र वृश्चिक राशि पर सायं 05/54 से ★
		(07.42)	(12.09)	
31/07	शुक्रवार	दशमी	अनुराधा	ज्येष्ठा के मूल आरम्भ रात्रि 01/40 पर
		(08.29)	(01.40)	
01/08	शनिवार	एकादशी	ज्येष्ठा	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर रात्रि 03/36 से, **पुत्रदा 11 एकादशी व्रत सबका, झूलनोत्सव प्रारंभ** ★
		(09.41)	(03.36)	
02/08	रविवार	द्वादशी	मूल	मूल चल रहे हैं, श्री विष्णु पवित्रारोपण, झूलनोत्सव ★
		(11.18)	60.00 समस्त	
03/08★	सोमवार	त्रयोदशी	मूल	मूल समाप्त प्रातः 05/54 पर, **सोम प्रदोष 13 व्रत, श्रावण सोमवार व्रत,** झूलनोत्सव ★
		(01.11)	05.54 प्रातः	
04/08★	मंगलवार	चतुर्दशी	पू.षा.	झूलनोत्सव, भद्रा रात्रि 03/13 से, **भौम व्रत, दुर्गा यात्रा, गौरी पूजा, हनुमत् दर्शन्,** चन्द्र मकर राशि पर दिन में 03/06 से ★
		(03.12)	08.27	
		सूर्य दिन भर मंडेगे।		
05/08	बुधवार	पूर्णिमा	उ.षा.	भद्रा दिन में 04/13 तक, स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, दिन में 04/13 के बाद **रक्षाबंधन,** संस्कृत दिवस, श्रावणी कर्म, झूलनोत्सव का समापन ★
		(05.12)	11.04	
		रक्षा बंधन सायं 04/13 के बाद।		

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2066 भ्रादपक्ष कृष्ण पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 05/27 • सूर्यास्त 06/33 • वर्षा ऋतु (ता0 06 अगस्त से 20 अगस्त 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
06/08	गुरुवार	प्रतिपदा 60.00 समस्त	श्रवण 01.37	पंचकारंभ रात्रि 02/45 पर, चन्द्र कुम्भ राशि पर रात्रि 02/45 से ★
07/08	शुक्रवार	प्रतिपदा 07.00	धनिष्ठा 03.55	अशून्य शयन 02 व्रत, चन्द्रोदय रात्रि, 07/21 पर, पंचक ★
08/08	शनिवार	द्वितीया 08.28	शतभिषा 05.50 सायं	भद्रा रात्रि 08/58 से, **विन्ध्याचली-भीम चण्डी देवी जयंती,** पंचक ★
09/08	रविवार	तृतीया 09.28	पू.भा. (07.21)	भद्रा दिन में 09/28 तक, चन्द्र मीन राशि पर दिन में 12/59 तक, **कज्जली 03 व्रत, संकष्टी श्री गणेश 04 व्रत,** चन्द्रोदय रात्रि 08/23 पर, पंचक ★
10/08	सोमवार	चतुर्थी 10.01	उ.भा. (08.21)	पंचक, रेवती के मूलारंभ रात्रि 08/21 से ★
11/08	मंगलवार	पंचमी 10.03	रेवती (08.50)	पंचक समाप्त रात्रि 08/50 पर, चन्द्र षष्ठी 06 व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 09/28 पर, चन्द्र मेष राशि पर रात्रि 08/50 पर, मूल चल रहे हैं ★
12/08	बुधवार	षष्ठी 09.35	अश्विनी (08.51)	मूल समाप्त रात्रि 08/51 पर, भद्रा दिन में 09/35 से रात्रि 09/05 तक, हल षष्ठी 06 व्रत ★
13/08★	गुरुवार	सप्तमी 08.36	भरणी (08.23)	चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 02/11 से, **श्री कृष्ण जन्माष्टमी 08 व्रत,** निशा काल में कृष्णावतार, चन्द्रोदय रात्रि 10/50 पर, गोकुलाष्टमी 08 उत्सव ★
		श्री कृष्ण जन्मोत्सव		
14/08	शुक्रवार	अष्टमी 07.14 प्रातः	कृत्तिका (07.36)	नवमी समाप्त रात्रि शेष 05/30 पर, **गूगा नवमी** ★
15/08	शनिवार	दशमी (03.26)	रोहिणी 06.28 सायं	भद्रा दिन में 03/37 से रात्रि 03/26 तक, **भारतीय स्वतन्त्रता दिवस,** उदय रोहिणी व्यापिनी मतावलम्बी बैष्णवों का श्रीकृष्ण जन्म ★
16/08	रविवार	एकादशी (01.12)	मृगशिरा 05.04 सायं	चन्द्र मिथुन राशि पर प्रातः 05/47 पर, **जया एकादशी 11 व्रत सबका** ★
17/08★	सोमवार	द्वादशी (10.48)	आर्द्रा 03.30	**मनसा देवी पूजन** (प.बं) ★
18/08★	मंगलवार	त्रयोदशी (08.20)	पुर्नवसु 01.51	भद्रा रात्रि 08/20 से, चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 08/16 से, सौर भाद्रपद मास आरंभ, **भौम प्रदोष 13 व्रत, मास शिव रात्रि व्रत**
19/08	बुधवार	चतुर्दशी 05.53 सायं	पुष्य 12.11	श्लेषा के मूलारंभ दिन में 12/11 से, भद्रा दिन में 07/07 से, अघोर चतुर्दशी 14 व्रत ★
20/08	गुरुवार	अमावस्या 03.32	श्लेषा 10.36	चन्द्र सिंह राशि पर दिन में 10/36 पर स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, कुशोत्पाटनी अमावस्या, **आज विशेष सती उत्सव झुन्झुनु** में, मूल चल रहे हैं ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

व्रत-पर्व

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं० 2066 भादपद शुक्ल पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 05/36 • सूर्यास्त 06/24 • वर्षा ऋतु (ता० 21 अगस्त से 04 सितम्बर 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
21/08	शुक्रवार	प्रतिपदा	मघा	मूल समाप्त दिन में 09/09 पर ★
		01.20	09.09	
22/08	शनिवार	द्वितीया	पू.फा.	चन्द्र कन्या राशि पर दिन में 01/44 पर ★
		11.25	07.57	
23/08★	रविवार	तृतीया	उ.फा.	भद्रा दिन में 09/12 से, हरितालिका 03 व्रत, **वैनायकी श्री गणेश 04 चतुर्थी व्रत** (विशेषोत्सव महाराष्ट्र), वाराह अवतार ★
		09.49	07.06	
		आज चन्द्र दर्शन निषेध।		
24/08★	सोमवार	चतुर्थी	हस्त	भद्रा दिन में 08/35 तक, चन्द्र तुला राशि पर सायं 06/30 से, ऋषि पंचमी 05 व्रत ★
		08.35	06.32 प्रातः	
25/08	मंगलवार	पंचमी	चित्रा	★★★★★★★
		07.49	06.27 प्रातः	
26/08	बुधवार	षष्ठी	स्वाती	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि 01/30 से, लोलार्क षष्ठी 06 व्रत, स्वामी कार्तिकेय दर्शन ★
		07.30	06.49 प्रातः	
27/08★	गुरुवार	सप्तमी	विशाखा	भद्रा दिन में 07/43 से रात्रि 08/06 तक, सन्तान सप्तमी 07 व्रत, राधा अष्टमी (दोपहर), दुर्वाष्टमी 08 व्रत ★
		07.43	07.43	
28/08	शुक्रवार	अष्टमी	अनुराधा	ज्येष्ठ के मूल आरंभ दिन में 09/07 से ★
		08.30	09.07	
29/08	शनिवार	नवमी	ज्येष्ठा	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर दिन में 10/58 से, श्री चन्द्र जयंती 09 व्रत ★
		09.42	10.58	
30/08★	रविवार	दशमी	मूल	मूल समाप्त दिन में 01/10 से, भद्रा रात्रि 12/15 से, महा रविवार व्रत, दशावतार 10 व्रत ★
		11.18	01.10	
31/08	सोमवार	एकादशी	पू.षा.	चन्द्र मकर राशि पर रात्रि 10/19 से, **पद्मा एकादशी 11 व्रत सबका,** कर्मा एकादशी, भद्रा दिन में 01/12 तक ★
		01.12	03.39	
01/09	मंगलवार	द्वादशी	उ.षा.	**भौम प्रदोष 12 व्रत,** वामन अवतार 12 व्रत, **वामन द्वादशी** ★
		03.16	06.17 सायं	
02/09	बुधवार	त्रयोदशी	श्रवण	★★★★★★★★★★★★
		05.17 सायं	(08.51)	
03/09	गुरुवार	चतुर्दशी	धनिष्ठा	भद्रा रात्रि 07/06 से, चन्द्र कुम्भ राशि पर दिन में 10/02 से, पंचक आरंभ दिन में 10/02 से, अनन्त चतुर्दशी व्रत ★
		(07.06)	(11.12)	
04/09	शुक्रवार	पूर्णिमा	शतभिषा	**पूर्णिमा का श्राद्ध,** भद्रा दिन में 07/52 तक, स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, महालय प्रारंभ, श्राद्ध पक्ष आरंभ ★
		(08.36)	(01.13)	

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

प्रेम–प्रचार

उपलब्ध DVD/CD/MP3

(I) श्रीभागवत कथा सम्पूर्ण
(II) श्रीराम कथा सम्पूर्ण
(III) नन्दोत्सव
(IV) उद्धव गोपी सम्वाद
(V) रासलीला
(VI) सुदामा चरित्र
(VII) अन्य भजन

उपलब्ध साहित्य

(I) श्रीमद् भागवत सार
(II) श्रीमद् भागवत संदेश

श्रीठाकुर जी के प्रवचनों की DVD/CD/MP3 एवं उनके द्वारा प्रचारित श्रीमद् भागवत संदेश व अन्य साहित्य आप संस्थान के निम्नलिखित प्रतिनिधियों से प्राप्त कर सकते हैं।

शहर	व्यक्ति	फोन
कोलकाता (प.बं)	पं. बृजेश पाण्डेय	09331892199
बेंगलूरू (कर्नाटक)	पं. प्रदीप झा	09341054545
कानपुर (उ.प्र.)	श्रीअजित ओझा	09336774319
पटना (बिहार)	श्रीशरद् चन्द्र	09334499000
रायपुर (छ.ग)	श्रीअंगेश कुमार	09300484749
अहमदाबाद (गुजरात)	श्रीबकुल प्रसाद	09377127614
सम्भलपुर (उड़ीसा)	श्रीसंतोष कुमार	09337751000
जमशेदपुर (झारखण्ड)	श्रीमुक्तेश्वर प्रसाद	09334316280

इसके अतिरिक्त समस्त भारत से भक्तजन कोलकाता शाखा से सम्पर्क कर सकते हैं।

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान (कोलकाता शाखा)
26, बड़तल्ला स्ट्रीट, तृतीय तल, कोलकाता
Tel:- 9330381000, 9331033090

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय पं. श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री द्वारा संरक्षित श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, पूर्णतया कृष्ण सेवा के लिए समर्पित है। श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की आधार शाखा श्रीठाकुर जी के निवास स्थान श्रीभागवत कृपा निकुंज, रमणरेती, वृन्दावन में अवस्थित है, जहाँ से विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्पों का संचालन किया जाता है।

विभिन्न सेवाएँ :

1, श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की अपनी सत्संग–शाला है, जो कि श्रीभागवत कृपा निकुंज के भूतल में अवस्थित है, यहाँ श्रीठाकुर जी भागवत प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ एवं विभिन्न प्रकार के सत्संग ज्ञान यज्ञ का आयोजन करते रहते हैं। (देखें–अंतिम रंगीन पृष्ठ)।

2. परिक्रमा मार्ग, रमणरेती स्थित 'श्रीभागवत धाम' में श्रीठाकुर जी विद्यार्थियों को समय–समय पर भागवत शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं। यह श्रीमद्भागवत विद्यालय है जिसकी पूरी देख रेख श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान करता है। (देखें– अंतिम रंगीन पृष्ठ)।

3. ब्रज एवं गिरिराज के सौंदर्यीकरण के लिए श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अष्टोत्तरसहस्र १००८ श्रीमद्भागवत कथा का विशाल आयोजन होता है। इस वर्ष २६ फरवरी से यह आयोजन श्रीधाम वृन्दावन में हुआ। इस आयोजन से बची राशि से वृक्षारोपण, पेयजल व्यवस्था, मार्ग सौन्दर्यीकरण का कार्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिपादित होता है।

4. श्रीराधा–माधव की कृपा से 'श्री भागवत आतिथेयम्' का निर्माण बड़े जोर पर है। प्रभु कृपा रही तो श्रीठाकुर जी इसका शुभोद्घाटन रथ–यात्रा पर करेंगे। इस तीन मंजिले भागवत आतिथेयम् में वृन्दावन आने वाले भक्तों के ठहरने का उत्तमोत्तम प्रबन्ध होने जा रहा है। रमणरेती मार्ग पर श्रीभागवत कृपा निकुंज के ठीक सामने एवं फोगला आश्रम से ठीक पहले यह निर्माण हो रहा है। (देखें– अंतिम रंगीन पृष्ठ)

5. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान के तत्वावधान में श्रीठाकुरजी समय–समय पर भारत के विभिन्न वनवासी, पिछड़े या प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित क्षेत्रों के लिए निःशुल्क श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन करते हैं, जिससे प्राप्त राशि उन क्षेत्रों की सेवाओं पर समर्पित होती है।

6. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान समय–समय पर सामूहिक यज्ञोपवीत एवं वैवाहिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जिसका जरूरत मंद भक्त लाभ उठा सकते हैं।

7. वृन्दावन स्थित श्रीभागवत गौशाला में गोपालन बड़े ही श्रद्धाभाव से होता रहता है।

8. अप्रैल २००६ में कलकत्ता प्रवास के मध्य श्रीठाकुर जी ने 'श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान' की कोलकाता शाखा का शुभोद्घाटन किया जो कि भारत के पूर्वी क्षेत्रों में आयोजित संस्थान के कार्यक्रमों की देखभाल करेगी।

आप किसी भी रूप से इस संस्थान से जुड़ना चाहते हैं, तो सम्पर्क कर सकते हैं–

पं. लक्ष्मीकान्त शर्मा, वृन्दावन
9837008073

पं. बिष्णु पाठक सारस्वत, कोलकाता
9331033090

द व्हाइट हाउस, वाशिंगटन में प्रवचन देते श्रद्धेय श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

श्रीधाम वृन्दावन में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के विशाल आयोजन में भावविभोर श्रोतासमूह

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प–

निर्माणाधीन श्रीभागवत आतिथेयम

श्रीमद्भागवत विद्यालय

श्रीभागवत कृपा निकुंज स्थित सत्संग भवन

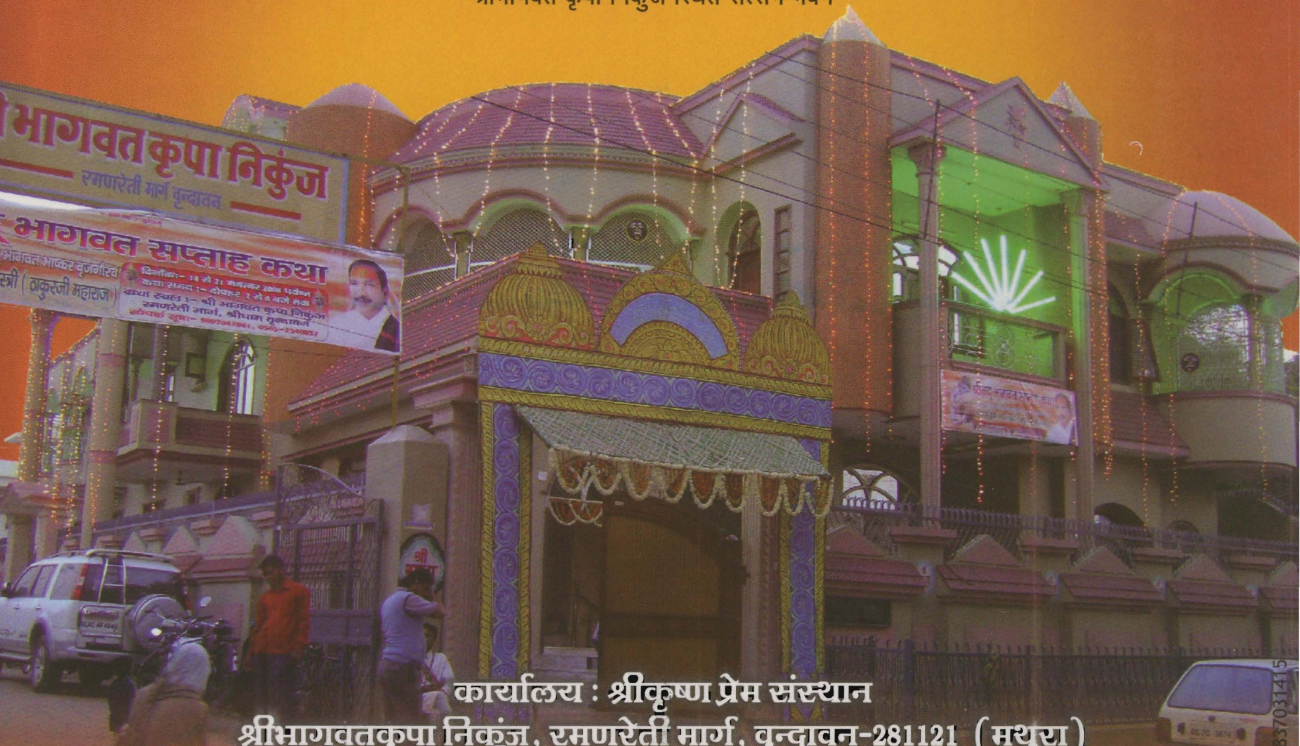

कार्यालय : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवतकृपा निकुंज, रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-281121 (मथुरा)

सदस्यता शुल्क– पंचवर्षीय : 500 रुपये ● आजीवन : 1500 रुपये ● एक प्रति : 20 रुपये

Harinam 9837031415